जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२८ अंक -०४ दिसंबर २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ३६ मूल्य - १५० रूपए प्रति

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

A.P. Mehta
Mob.: 9425047092

श्री आदिनाथाय नमः श्री राजेन्द्र सूरि गुरूभ्यो नमः

Pritesh Jain
Mob.: 9770984630

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ,

Shri Adinath Rajendra Jain Shwetamber Pedi (Trust)

Shri MohanKheda Tirth, Post Rajgarh, Dist. Dhar, Madhya Pradesh, Bharat- 454116
धर्मशाला व्यवस्था : हरेसिंह, Mob.: 8319627982 | email: mohankheda.trust@hotmail.com

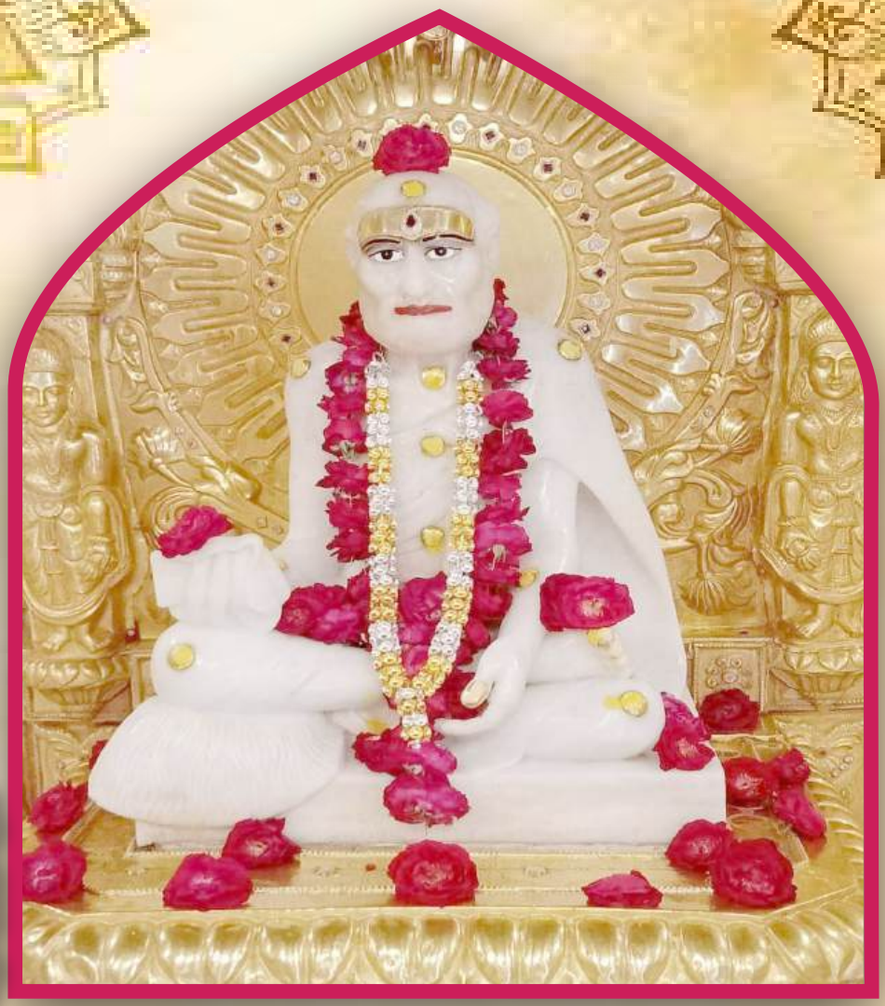

गुरु सप्तमी २७ दिसंबर २०२५

गुरुसप्तमी के पावन पर्व पर विश्वप्रसिद्ध मोहनखेड़ा तीर्थ में सभी जैन धर्मावलम्बियों का स्वागत है

पू. पिताश्री
स्व. श्री धनराजजी

पू. मातुश्री
स्व. कमलाबेन

धुम्बडिया (राज) निवासी शा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी परिवार
श्रीमती सुशीलाबेन बाबुलालजी डोडीया गाँधी
पुत्र-पुत्रवधु : जयंत-ममता, शैलेष-मंदाकिनी पौत्र-पौत्री : कुशी, कियाश, झील, क्रिश
बेटा-पोता : धनराजजी हरजीजी डोडीया गाँधी परिवार

वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला महासभा

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीमती सरिता महेंद्र कुमार जैन

श्रीमती सरिता एम के जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन
महिला महासभा निर्विरोध अध्यक्ष बनाए जाने
पर हार्दिक शुभकमनाये

राष्ट्रीय पदाधिकारियो का स्वागत

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महिला
महासभा के राष्ट्रीय पदाधिकारियो की नई सूची
सभी पदाधिकारियो को बहुत बहुत बधाई

श्रीमती रंजना जैन
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्रीमती संध्या जैन
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्रीमती मीना जैन
संयुक्त कार्याध्यक्ष

श्रीमती सुमन जैन
संयुक्त कार्याध्यक्ष

श्रीमती वीणा जैन
सह कार्याध्यक्ष

श्रीमती निशा जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती सुधा जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती शिखा जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती माधवी जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती अनीता जैन
उपाध्यक्ष

श्रीमती नीलम जैन
उपाध्यक्ष

डॉ. ज्योस्तना जैन
महामन्त्री

श्रीमती ऋचा जैन
संयुक्त महामन्त्री

श्रीमती इंद्रा जैन
मंत्री

श्रीमती अनु जैन
कोषाध्यक्ष

श्रीमती सुमित्रा जैन
केन्द्रिय सदस्य

श्रीमती स्नेहलता जैन
केन्द्रिय सदस्य

श्रीमती रजनी जैन

केन्द्रिय सदस्य

अगला अंक

जैनएकता

जैनएकता

गुरुसप्तमी के पावन पर्व पर विश्वप्रसिद्ध मोहनखेड़ा तीर्थ
में सभी जैन धर्मावलम्बियों का स्वागत है

नगर सेठ आहोर

M.KUNDANMAL JAIN
Mob: 9444010217

SURESH JAIN
Mob: 9841070604

JAGDISH JAIN
Mob: 9841130367

SALEM STEEL SUPPLIERRS

Authorised Dealers In: Salem Steel Plant Products, Jindal Stainless

Office- S.O.: 12/1, Mooker Nalla Muthu Street, Chennai, Tamil Nadu, Bharat- 600001
Tel.: 25222084, 42164300, Mob.: 9841130367, 9841070604, Fax: 25231637 Email-jagdish 079@yahoo.com
Home- 15, Govindappa Naicken Street, 2nd Floor, Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600001, Tel.: 25244944

ADINATH STEEL

Dealers in: Stainless Steel Sheets, SS Plates, SS Coils, SS Pipes, SS Fittings, MS Sheets, MS Plates, MS Coils, MS Pipes, MS Fittings,
Aluminium Coil+Sheets+Plates Dealesr of Major Industrial Raw Material for all segments Specialist in Grade 304, 304L, 316, 3161, 202 & 409M

15, Govindappa Naicken Street, Chennai, Tamil Nadu, Bharat- 600001
Ph.: 044-42131251, 23468018, Mob.: 9841130367, 9600150008 Email: adinath steel2015@yahoo.com

संक्षिप्त जीवन परिचय

गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी

राजेंद्रसुरि जी का जन्मस्थान एवं माता-पिता-परिवार

'श्रीराजेन्द्रसूरीश्वर' एवं श्री राजेन्द्रगुणमंजरी के अनुसार, वर्तमान राजस्थान प्रदेश के भरतपुर शहर में दहीवाली गली में पारिख परिवार के ओसवंशी श्रेष्ठि ऋषभदास रहते थे, आपकी धर्मपत्नी का नाम केशरबाई था, जिसे अपनी कुक्षि में श्री राजेन्द्र सुरि जैसे व्यक्तित्व को धारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्रेष्ठि रुषभदास जी की तीन संतानें थीं, दो पुत्र : बड़े पुत्र का नाम माणिकचन्द एवं छोटे पुत्र का नाम रतनचन्द था एवं एक कन्या थी, जिसका नाम प्रेमा था, छोटा पुत्र रतनचन्द आगे चलकर आचार्य श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि नाम से प्रख्यात हुए।

वंश : पारेख परिवार की उत्पत्ति

आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरि के अनुसार, वि.सं. 1170 में आचार्यदेव श्री जिनदत्तसुरि महाराज के उपदेश से राठौड़ वंशीय राजा खरहत्थ ने जैन धर्म स्वीकार किया, उनके तृतीय पुत्र भेंसाशाह के शेष पृष्ठ ६ पर...

जन्म नाम	:	रत्नराज पारख
जन्म स्थल	:	भरतपुर (राजस्थान)
जन्मतिथि	:	वि.सं. १८८३ पौष शुक्ल सप्तमी, गुरुवार, ३ दिसम्बर १८२७
पिता का नाम	:	श्रेष्ठी ऋषभदास पारख
माता का नाम	:	धर्मपरायणा केसर बाई पारख
अग्रज नाम	:	माणकचंद पारख
बहनों के नाम	:	सुश्री गंगा एवं प्रेमा पारख
दीक्षा तिथि	:	वि.सं. १९०४ वैशाख शुक्ला पंचमी
दीक्षा स्थल	:	झीलों की सुरम्य नगरी, उदयपुर
दीक्षा दाता	:	आ. श्री प्रमोदसूरिजी के ज्येष्ठ गुरु भ्राता श्री हेमविजयजी म. सा.
दीक्षा नाम	:	मुनि श्री रत्नविजयजी म.सा.
ज्ञानदाता	:	सरस्वती विद्याधारी मुनि श्री सागरचन्द्रजी म. सा.
बड़ी दीक्षा	:	वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया सं. १९०९ उदयपुर में मुनि श्री हेमविजयजी म. द्वारा पण्डित पद प्रदान, वि.सं. १९२१ में धरणेंद्रसूरिजी द्वारा दफ्तरी पद प्रदान
आचार्यपद	:	वि.सं. १९२४ वैसाख शुक्ल पंचमी, आहोर में
नामकरण	:	श्री पू.विजय राजेन्द्रसूरिजी म.सा.
क्रियोद्धार अभिग्रह	:	महावीर स्वामी का २३८९ वाँ जन्म कल्याणक चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
क्रियोद्धार अभिग्रहपूर्ति	:	वि.सं. आषाढ़ बदी १० शनिवार
प्रतिष्ठा व अन्जनशलाका	:	जालोर, कुक्षी, मोहनखेड़ा, निम्बाहेड़ा, रिंगनोद, झाबुआ, कड़ौद, आहोर, सियाणा, सरसी, शिवगंज आदि।
देहत्याग (स्वर्गारोहण)	:	राजगढ़ में वि.सं. १९६३ पौष शुक्ल सप्तमी

साहित्यसाधना : श्री अभिधान राजेन्द्रकोष का ग्रंथ सं. १९६० में पूर्ण हुआ, १९ दिसम्बर, १९०६ पौष शुक्ल तृतीया को मुनि दीपविजयजी म.सा. व मुनि यतीन्द्रविजयसूरीश्वरजी म. सा. को प्रकाशन हेतु सौंपना, संस्कृत, प्राकृत भाषा में ६० विद्वतापूर्ण ग्रन्थों की स्वतन्त्र रचना की।

उल्लेखनीय चातुर्मास:

उदयपुर, इन्दौर, नागौर, आहोर, खाचरौद, रतलाम, कुक्षी, थराद, जावरा, भीनमाल, अलिराजपुर, सियाणा, सूरत, गुड़ा आदि:

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

२९ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२८, अंक ०४, दिसंबर २०२५

निडर जैन पत्रकार
जिनागम
समाज जैन शासन की हकीकत किसी आंख सामने रखेगा

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४

अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com

अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ○ **सम्पादकीय** ○ दिगम्बर श्वेताम्बर

'जैन एकता' के नारे के साथ अहिंसा प्रिय जैन समाज ने गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान मिले, बजाया बिगुल

हम सब जैनों के आराध्य २४ तीर्थंकरों को प्रातः वंदन करने वाले आराध्यों का एक ही उद्देश्य है कि स्वयं जिएं और दूसरों को भी जीने दें, इसी अभियान के तहत गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान मिले, अभियान शुरू किया,जिसमें आंशिक सफलता भी मिली है।

खुशी इस बात की भी है कि दिगम्बर व श्वेताम्बर दोनों ही पंथों को मानने वालों की इच्छा यह है कि गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान मिलना ही चाहिए, साथ ही भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए, हम भारतीय हैं, इंडिया क्यों बोलें? हम सभी जानते हैं कि इंडिया नाम गुलामी का प्रतीक है।

गत दिनों अहिंसा प्रेमी 'भारत' राष्ट्र के पंतप्रधान नरेंद्र मोदी जी के साथ 'भारत' के सभी राज्यों के प्रमुख मुख्यमंत्री कार्यालय को पत्र भी भेजा गया, उत्तर भी मिला (जिनागम के प्रस्तुत अंक के पृष्ठ ११ पर छपा है, जरूर पढ़ें) कि आपका निवेदन मिला है, कार्यवाही के लिए राष्ट्रपति कार्यालय विचार करेगा।

मैं तो इतना ही कहूंगा की समस्त जैन समाज के अंतर्गत सभी पंथों की संस्थाओं के द्वारा स्थानीय सांसद, विधायक, कलेक्टर, पार्षद इत्यादि से निवेदन करें कि 'भारत' की पवित्र भूमि को अब तो किसी की हत्या से अपवित्र ना करवाएं, पवित्र भूमि के लिए विशेष कर 'गौमाता' को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान दिलवाएं, क्योंकि गौमाता में कोटीशः देवी-देवताओं का वास होता है, और 'गौमाता' के आशीर्वाद से ही हम विश्व में सम्मानित भी हो सकते हैं।

मैं समस्त 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठकों से विनंती भी करता हूं कि महाराष्ट्र सरकार को धन्यवाद देवें, क्योंकि महाराष्ट्र सरकार ने 'गौमाता' को 'राज्यमाता' का सम्मान दे दिया है (घोषणा पढ़ें पृष्ठ १९ पर) जिससे महाराष्ट्र के हर देशी गोवंश को महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रति गाय ₹५० दिया जा रहा है, जिससे महाराष्ट्र की हर गौशाला को सहयोग भी प्राप्त हो रहा है, यदि कोई गौशाला 'महाराष्ट्र गौसेवा आयोग' के अंतर्गत पंजीकृत नहीं है तो वे अपनी गौशाला को पंजीकरण करवा लें।

प्रस्तुत अंक पोष सुदी सातम के दिन जन्म व मोक्षगामी हुए राजेंद्र सुरिश्वर जी महाराज साहब के जीवन परिचय के साथ विशेषांक आपके हाथों में है, जिन्होंने 'जैन एकता' व गौवंश की सुरक्षा के लिए अनगिनत कार्य किए हैं, जिनको नमन करते हुए उनके भक्त आज भी उस पथ पर चल कर प्राणी मात्र की सेवा कर रहे हैं, ऐसे पथगामियों को मेरा सादर जय जिनेंद्र!

SBI

for payment

HDFC BANK

for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ५ से... पांच पुत्र थे, उनमें तीसरे पुत्र पासुजी आहेड्नगर (वर्तमान आयड-उदयपुर) के राजा चंद्रसेन के राजमान्य जौहरी थे, उन्होंने विदेशी व्यापारी के हीरे की परीक्षा करके बताया कि यह हीरा जिसके पास रहेगा, उसकी स्त्री मर जायेगी, ऐसी सत्य परीक्षा करने से राजा पासु जी के साथ 'पारखी' शब्द का अपभ्रंश 'पारिख' शब्द बना। पारिख पासुजी के वंशज वहाँ से मारवाड़, गुजरात, मालवा, उत्तरप्रदेश आदि जगह व्यापार हेतु गये, उन्हीं में से दो भाइयों के परिवार में से एक परिवार 'भरतपुर' आकर बस गया था, जन्म को लेकर ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि आचार्य श्री के जन्म के पहले एक रात्रि में उनकी माता केशरबाई ने स्वप्न में देखा कि एक तरुण व्यक्ति ने प्रोज्ज्वल कांति से चमकता हुआ रत्न केशरबाई को दिया -

दर्शनीय-पूजनीय

'गर्भाधानेड्थ साडद्क्षीत स्वप्ने रत्नं महोत्तम्म'

निकट के स्वप्नशास्त्री ने स्वप्न का फल भविष्य में पुत्ररत्न की प्राप्ति होना बताया।

जन्म समय - वि.सं. १८८३ पौष सुदि सप्तमी, गुरुवार, तदनुसार ३ दिसम्बर सन् १८२७ को माता केशरबाई ने देदीप्यमान पुत्ररत्न को जन्म दिया। पूर्वोक्त स्वप्न के अनुसार माता-पिता एवं परिवार ने मिलकर नवजात पुत्र का नाम 'रत्नराज' रखा।

व्यावहारिक शिक्षा - आचार्य श्रीमद्विजय यतीन्द्रसुरि एवं मुनि गुलाबविजय के अनुसार योग्य उम्र में पाठशाला में प्रविष्ट हुए, मेधावी रत्नराज ने केवल १० वर्ष की अल्पायु में ही समस्त व्यावहारिक शिक्षा अर्जित की, साथ ही धार्मिक अध्ययन में विशेष रुचि होने से धार्मिक अध्ययन में प्रगति की। अल्प समय में ही प्रकरण और तात्विक ग्रंथों का अध्ययन कर लिया। तीव्र क्षयोपशम के कारण प्रखरबुद्धि बालक रत्नराज १३ वर्ष की छोटी सी उम्र में अतिशीघ्र विद्या एवं कला में प्रवीण हो गए, श्री राजेन्द्रसूरि रास के अनुसार उसी समय विक्रम संवत् १८९३ में भरतपुर में अकाल पड़ने से कार्यवश माता-पिता के साथ आये रत्नराज का उदयपुर में आचार्य श्री प्रमोदसूरि जी के प्रथम दर्शन एवं परिचय हुआ, उसी समय उन्होंने रत्नराज की योग्यता देखकर ऋषभदास जी ने रत्नराज की याचना की लेकिन ऋषभदास ने कहा कि अभी तो बालक है, आगे किसी अवसर पर, जब यह बड़ा होगा और उसकी भावना होगी, तब देखा जायेगा।'

यात्रा एवं विवाह विचार - जीवन के व्यापार-व्यवहार के शुभारंभ हेतु मांगलिक स्वरुप तीर्थयात्रा कराने का परिवार में विचार हुआ। माता-पिता की आज्ञा लेकर बड़े भाई माणेकचंद के साथ धुलेवानाथ - केशरियाजी तीर्थ की पैदल यात्रा करने हेतु प्रयाण किया, पहले 'भरतपुर से उदयपुर' आये, वहाँ से अन्यत्र यात्रियों के साथ केशरियाजी की यात्रा प्रारंभ की, तब रास्ते में पहाड़ियों के बीच आदिवासी भीलों ने हमला कर दिया, उस समय रत्नराज ने यात्रियों की रक्षा की, साथ ही नवकार मंत्र के जाप के बल पर जयपुर के पास अंब ग्राम निवासी शेठ शोभागमलजी की पुत्री रमा को व्यंतर के उपद्रव से मुक्ति भी दिलायी, सभी के साथ केशरियाजी की यात्रा कर वहाँ से उदयपुर, करेडा पार्श्वनाथ एवं गोडवाड के पंचतीर्थों की यात्रा कर वापस भरतपुर आये।

ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि शोठ सोभागमलजी ने रत्नराज के द्वारा पुत्री रमा को व्यंतर दोष से मुक्त किये जाने के कारण रमा की सगाई रत्नराज के साथ करने हेतु बात की थी, लेकिन वैराग्यवृत्ति रत्नराज ने इसके लिए इंकार कर दिया।

व्यापार - रत्नराज के पिता श्रेष्ठि ऋषभदास का हीरे-पन्ने आदि जेवरात एवं सोने-चांदी का वंश परम्परागत व्यापार था। रत्नराज ने १४ साल की छोटी सी उम्र में चैत्र सुदि प्रतिपदा के दिन परम्परागत हीरा-पन्ना आदि का व्यापार शुरु किया और केवल दो महिने में ही व्यापार का पुरा अनुभव प्राप्त कर लिया, उसके बाद व्यापार हेतु बड़े भाई के साथ भरतपुर से पावापुरी, सम्मेद शिखर जी आदि तीर्थों की यात्रा कर कलकत्ता पहुँच गये। थोड़े समय तक वहाँ व्यापार कर वहाँ से जलमार्ग से व्यापार हेतु सीलोन (श्रीलंका) पहुँचे, वहाँ ढाई से तीन साल तक व्यापार कर न्याय-नीतिपूर्वक कल्पनातीत धन उपार्जन किया, व्यापार में अत्याधिक व्यस्तता एवं मुनाफा होने के बावजूद भी माता-पिता के वृद्धत्व एवं गिरते स्वास्थ्य का समाचार पाकर दोनों भाई व्यापार समेटकर वापिस कलकत्ता होकर 'भरतपुर' आ गये।

वैराग्यभाव - माता-पिता की वृद्धावस्था एवं दिन- शेष पृष्ठ ८ पर...

जिस घर में गुरू राजेन्द्र की तस्वीर,
उसकी बदल गयी तकदीर।
जिस घर में गुरू की मुरत,
उस घर में हंसती हर सूरत।।

Sanghvi electric co.
WONDER HOUSE
85, Narayan Mudali Street, Chennai,
Tamil Nadu, Bharat-600079
Ph.: 25388821, 25386232, 42165859
E-mail: glsanghvi@yahoo.com / Sanghvi electric co.

V-FOUR®
Infinite Electrical Innovation
VIHAN
SPREAD THE LIGHT
Switches & Accessories

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ७ से... प्रतिदिन गिरते स्वास्थ्य के कारण दोनों भाई माता-पिता की सेवा में लग गए, रत्नराज ने उनको अंतिम आराधना करवाई एवं एक दिन के अंतर में माता-पिता दोनों ने समाधिभाव से परलोक प्रयाण किया। माता-पिता के स्वर्गवास के पश्चात उदासीन रत्नराज आत्मचिंतन में लीन रहने लगे, नित्य अर्ध-रात्रि में, प्रात:काल में कायोत्सर्ग, ध्यान, स्वाध्याय, चिंतन-मनन आदि में समय व्यतीत करते रहे। सुषुप्त वैराग्यभावना के बीज अंकुरित होने लगे, इतने में उसी समय (वि.सं. १९०२) में पूज्य श्री प्रमोदसूरिजी का चातुर्मास 'भरतपुर' में हुआ, आपका तप-त्याग से भरा वैराग्यमय जीवन एवं तत्वज्ञान से ओत-प्रोत वैराग्योत्पादक उपदेशामृत ने रत्नराज के जिज्ञासु मन का समाधान किया, जिससे रत्नराज के वैराग्यभाव में अभिवृद्धि हुई, फलस्वरुप उनकी दीक्षा-भावना जागृत हुई और वे भागवती दीक्षा (प्रवज्या) ग्रहण करने हेतु उत्कंठित हो गये।

दीक्षा - दीक्षा को उत्कंठित रत्नराज में भाव उछल रहे थे, केवल निमित्त की उपस्थिति आवश्यक थी, निमित्त का योग वि.सं. १९०४ वैशाख सुदि ५ (पंचमी) को हो भी गया, इस प्रकार अपने बड़े भ्राता माणिकचंदजी की आज्ञा लेकर रत्नराज ने उदयपुर (राज.) में पिछोला झील के समीप उपवन में आम्रवृक्ष के नीचे मुनि हेमविजयजी म. सा. से यति दीक्षा ग्रहण की, इस प्रकार आपके दीक्षा गुरु आचार्य श्री प्रमोद सूरि जी अब नवदीक्षित मुनिराज श्री रत्नविजयजी के नाम से पहचाने जाने लगे।

अध्ययन - 'पढमं नाणं तओ दया' अर्थात् ज्ञान के बिना संयम जीवन की शुद्धि एवं वृद्धि नहीं है, इस बात को निर्विवाद सत्य समझकर गुरुदत्त ग्रहण शिक्षा के साथ-साथ मुनिश्री रत्नविजयजी ने दत्तवित्त होकर अध्ययन प्रारंभ किया। व्याकरण, काव्य, अलंकार, न्याय, दर्शन, ज्योतिष, वैद्यक, कोश, आगम आदि विषयों का सर्वांगीण अध्ययन आरंभ किया। मुनि रत्नविजयजी ने गुरु आज्ञा से खरतरगच्छीय यति श्री सागरचंदजी के पास व्याकरण, साहित्य, दर्शन आदि का अध्ययन किया।

तत्पश्चात निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, वृत्ति आदि पंचागी सहित जैनागमों का विशद अध्ययन वि.सं. १९१०-११-१२-१३ में श्री पूज्य श्री देवेन्द्रसूरि के पास किया, आपकी अध्ययन जिज्ञासा और रुचि देखकर श्री देवेन्द्रसूरि ने इन्हें विद्या की अनेक दुरुह और अलभ्य आमनायें प्रदान की। श्री राजेन्द्रसूरि द्वारा (पूर्वार्द्ध) के लेखकरायचन्दजी के अनुसार मुनि रत्नविजय ने ज्योतिष का अभ्यास जोधपुर (राजस्थान) में चंद्रवाणी ज्योतिष के पास किया।

बड़ी दीक्षा - वि.सं. १९०९ में अक्षय तृतीया (वैशाख सुदि तीज) के दिन श्री मद्विजय प्रमोदसूरिजी ने उदयपुर (राजस्थान) में आपको बड़ी दीक्षा दी, साथ ही श्री पूज्य श्री प्रमोदसूरिजी एवं श्री देवेन्द्रसूरिजी ने आपको **शेष पृष्ठ १० पर...**

गुरुसप्तमी के पावन पर्व पर विश्वप्रसिद्ध मोहनखेड़ा तीर्थ में सभी जैन धर्मावलम्बियों का स्वागत है

SUKHRAJ SUMERMALJI MEHTA

Mob No : 9821460941

102 Commerce House, 140 Nagindas Master Road, Fort, Mumbai, Maharshtra, Bharat - 400023

FREE HOME DELIVERY

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

SINCE 1978

SATTVIK VERIFIED · VEGETERIAN & JAIN · QUALITY ASSURANCE

NAtural KhaO... Dilse Apnao...™

श्रेयस की पसंद

रोज़ की रसोई के लिए शुद्ध और स्वादिष्ट
- नाकोडा मूंगफली तेल

89288 82457 / 85915 62269 / 89285 86181 / 91377 56585

GHEE AND OIL AVAILABLE IN ALL SIZES AT YOUR DOOR STEP

NAKODA TRUSTED QUALITY OVER 35 YEARS

M/s. KEWALCHAND VINODKUMAR
K.B. Products Pvt. Ltd.
Customer Care: +91 9819475175 | Website: www.nakodagheetel.com | E-mail: info@gheetel.com
/nakodagheetel | An ISO 22000:2018 & HACCP Certified Company

पृष्ठ ८ से... उस समय पंन्यास पद भी दिया।

अध्यापन - आपकी योग्यता और स्वयं की अंतिम अवस्था ज्ञात कर श्रीपूज्य श्री देवेन्द्रसूरि ने अपने बाल शिष्य धरणेन्द्रसूरिजी (धीर विजय) को अध्ययन कराने का मुनिश्री रत्नविजय जी को आदेश दिया। गुरु आज्ञा व श्रीपूज्यजी के आदेशानुसार आपने वि.सं. १९१४ से १९२१ तक धीरविजय आदि ५१ यतियों को विविध विषयों का अध्ययन करवाया और स्व-पर दर्शनों का निष्णांत बनाया। श्री पूज्यश्री धरणेन्द्रसूरि ने भी विद्यागुरु के रुप में सम्मान हेतु आपको 'दफ्तरी' पद दिया, दफ्तरी पद पर कार्य करते हुए आपने वि.सं. १९२० में रणकपुर तीर्थ में चैत्र सुदि १३ (महावीर जन्मकल्याणक) के दिन पाँच वर्ष में क्रियोद्धार करने का अभिग्रह किया। वि.सं. १९२२ का चातुर्मास प्रथम बार स्वतंत्र रुप से २१ यतियों के साथ 'जालोर' में हुआ, इसके बाद वि.सं. १९२३ का चातुर्मास श्री धरणेन्द्रसुरिजी के आग्रह से 'घाणेराव' में उन्हीं के साथ हुआ।

आचार्य पद पर आरोहण : पृष्ठभूमि और प्रक्रिया

ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि वर्षाकाल में ही घाणेराव में 'इत्र' के विषय में मुनि रत्नविजय का श्री धरणेद्रसूरिजी से विवाद हो गया, श्री रत्नविजय जी साधुचर्या के अनुसार साधुओं को 'इत्र' आदि उपयोग करने का निषेध करते थे जबकि धरणेन्द्रसुरि एवं अन्य शिथिलाचारी यति इत्र आदि पदार्थ ग्रहण करते थे, कल्पनासूत्रार्थ प्रबोधिनी के अनुसार वि.सं. १९२३ के पर्युषण पर्व में तेलाधार के दिन शिथिलाचारी को दूर करने के लिये मुनि रत्नविजय ने तत्काल ही मुनि प्रमोदरुचि एवं धनविजय के साथ घाणेराव से विहार कर नाडोल होते हुए आहोर शहर आकर अपने गुरु श्री प्रमोदसूरिजी से संपर्क किया और बीती घटना जानकारी दी, साथ ही अनेक विद्वान यतियों ने भी श्री पूज्य श्री प्रमोदसूरिजी शिथिलाचार का उपचार करने हेतु लिखा, तब मुनि रत्नविजय ने आहोर में अट्ठम तप कर मौन होकर 'नमस्कार महामंत्र' की एकान्त में आराधना की।

आराधना के पश्चात श्री प्रमोदसूरिजी ने रत्नविजय से कहा- 'रत्न! तुमने क्रियोद्धार करने का निश्चय किया है सो योग्य है व मुझे प्रसन्नता भी है, परंतु अभी कुछ समय ठहरो, पहले श्री पूज्यों और यतियों से त्रस्त जनता को मार्ग दिखाओ, फिर क्रियोद्धार करो, तत्पश्चात गुरुदेव प्रमोदसूरिजी से विचार विमर्श कर मुनि रत्नविजय ने अपनी कार्य प्रणाली निश्चित की। वि.सं. १९२३ में इत्र विषयक विवाद के समय ही प्रमोदसूरि जी ने मुनि रत्नविजय को आचार्य पद एवं श्रीपूज्य पदवी देना निश्चित कर लिया था।

'श्री राजेन्द्र गुणमंजरी' आदि में उल्लेख है कि वि.सं. १९२४, वैशाख सुदि पंचमी बुधवार को श्री प्रमोदसूरिजी ने निजपरम्परागत सूरिमंत्रादि प्रदान कर श्रीसंघ आहोर द्वारा किये गये महोत्सव में मुनि श्री रत्नविजय जी को आचार्य पद एवं श्री पूज्य पद प्रदान किया और मुनि रत्नविजय का नाम 'श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरि रखा गया। आहोर के ठाकुर यशवंतसिंह जी ने परम्परानुसार श्रीपूज्य - आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरि को रजतावृत्त चामर, छत्र, पालकी, स्वर्णमण्डित रजतदण्ड, सूर्यमुखी, चंद्रमुखी एवं दुशाला (कांबली) आदि भेंट दिये, इस प्रकार बालक रत्नराज क्रमश: मुनि रत्नविजय, पंन्यास रत्नविजय और अब श्रीपूज्य एवं आचार्य पद ग्रहण करने के बाद आचार्य 'श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरि नाम से पहचाने जाने लगे।

आचार्य पद ग्रहण कर आप मारवाड़ से मेवाड़ की और विहार कर शंभूगढ़ पधारे, वहाँ के राणाजी के कामदार फतेहसागरजी ने पुन: पाटोत्सव किया और आचार्यश्री को शाल (कामली) छड़ी, चँवर आदि भेंट किये।

आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरि ने शम्भूगढ से विहार करते हुए वि.सं. १९२४ का चातुर्मास 'जावरा' में किया। आचार्य पद पर आरोहण के पश्चात आपका यह प्रथम चातुर्मास था। 'जावरा' चातुर्मास के बाद वि.सं. १९२४ के माघ सुदि ७ को आपने नौकलमी कलमनामा बनाकर श्री पूज्य धरणेन्द्रसूरि द्वारा भेजे गये मध्यस्थ मोतीविजय और सिद्धिकुशलविजय - इन दो यतियों के साथ भेजकर श्री धरणेन्द्रसूरि आदि समस्त यतिगण से अनुमत करवाया।

क्रियोद्धार का बीजारोपण

श्री राजेन्द्रसूरिरास (पूर्वार्द्ध) के अनुसार दीक्षा लेकर वि.सं. १९०६ में उज्जैन पधारे तब गुरुमुख से उत्तराध्ययन सूत्र के अन्तर्गत भृगु पुरोहित के पुत्रों की कथा सुनकर मुनि रत्नविजयजी के भावों में वैराग्य वृद्धि हुई और आप क्रियोद्धार करने के विषय में चिंतन करने लगे, श्री राजेन्द्रसूरिरास के अनुसार पंन्यास श्रीरत्नविजयजी जब विहार करते हुए वि.सं. १९२० में राजगढ थे तब वहाँ यति मांविजय जी ने अपने गुरु की खाली गादी पर श्री पूज्य बनकर बैठने को कहा, तब आपने कहा कि मुझे तो क्रियोद्धार करना है, ऐसा कहकर श्रीपूज्य की गादी पर बैठने से मना कर दिया।

क्रियोद्धार का अभिग्रह

वि.सं. १९२० में ही पं. रत्नविजयजी अन्य यतियों के साथ विहार करते हुए चैतमास में 'राणकपुर' पधारे तब तीर्थंकर महावीर के २३८९ कल्याणक के उपलक्ष में रत्नविजयजी ने अट्ठम (तीन उपवास) तप कर 'राणकपुर' में परमात्मा आदिनाथ की साक्षी से पाँच वर्षों में क्रियोद्धार करने का अभिग्रह लिया था, पारणा के दिन प्रात:काल में मुनि रत्नविजयजी मन्दिर से दर्शन कर बाहर जिनालय के सोपान उतर रहे थे तब अबोध बालिका ने आकर कहा - नमो आयरियाणं, आयरियाणं, महाराज साहेब, तेला (अट्ठम तप) सफल हो गया, आप पारणा करो।

(क्रियोद्धार) बासठ महीनों में करना, ऐसा कहकर व बालिका दौड़ कर मन्दिर में लुप्त हो गई, इस प्रकार उन्हें दिव्य शक्ति के द्वारा क्रियोद्धार करने का संकेत भी मिला, इसके बाद वि.सं. १९२२ में जालोर (राजस्थान) चातुर्मास में भी आपको क्रियोद्धार करने की तीव्र भावना हुई, यति महेंद्रविजयजी, धनविजयजी आदि ने भी क्रियोद्धार करने में अपनी सहमति बताई, वि.सं. १९२३ में भी जब आप घाणेराव से 'आहोर' पधारे थे, तब भी आपने 'आहोर' में एक महिना तक अभिग्रह धारण कर शुद्ध अन्न-पानी ही उपयोग में लिये, इतना ही नहीं अपितु राजेन्द्रसूरिरास में तो स्पष्ट उल्लेख है कि श्रीपूज्य पद ग्रहण करने के पश्चात आपने अपने गुरुश्री प्रमोद्सूरिजी से भी क्रियोद्धार हेतु विचार विमर्श कर आज्ञा भी प्राप्त की थी, अत: उत्कृष्ट तप-त्यागमय शुद्ध साधु जीवन का आचरण एवं वीरवाणी के प्रचार के अपने एक मात्र ध्येय की पूर्ति हेतु पूर्वोत्कारनुसार धरणेन्द्रसूरि आदि के द्वारा नव कलमनामा अनुमत होने के बाद आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिश्वर जी ने वि. सं. १९२५ में आषाढ वदि दशमी शनिवार, रेवती नक्षत्र, मीन राशि, शोभन (शुभ) योग, मिथुन लग्न में तदनुसार दिनांक १५-६-१८६८ में क्रियोद्धार कर शुद्ध जीवन अंगीकार किया, उसी समय छड़ी, चामर, पालखी आदि समस्त परिग्रह श्री ऋषभदेव भगवान के जिनालय में श्री संघ जावरा को अर्पित किया, जिसका ताड़पत्र पर उत्कीर्ण लेख श्री सुपार्श्वनाथ के गर्भगृह के द्वार पर लगा हुआ है। क्रियोद्धार के समय आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिजी ने अट्ठाई (आठ उपवास) तप सहित जावरा शहर के बाहर (खाचरोद की ओर) नदी के तट पर वटवृक्ष के नीचे नाण (चतुर्मुख जिनेश्वर प्रतिमा) के समक्ष केश लोंच किया, पंच महाव्रत उच्चारण किये एवं शुद्ध साधु जीवन अंगीकार कर सुधर्मा स्वामी जी की ६८वीं पाट पर आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी नाम से प्रख्यात हुए।

भारत सरकार को सहृदय धन्यवाद

इस email id पर भेजा गया था पत्र
us.petitions@rb.nic.in

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

दिनांक: २० नवंबर २०२५

आदरणीय प्रधानमंत्री
श्री नरेंद्र मोदी जी
साउथ ब्लॉक, रायसिना हिल
नई दिल्ली, भारत - ११००११

विषय: भारत का एक राज्य बिहार में 'भाजपा' की जीत के लिए आपको बधाइयां।
संदर्भ: विश्व के मानचित्र में INDIA की जगह BHARAT लिखा जाए और भारत में 'गौमाता' को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान मिले, ऐसी विनंती।

जय भारत!
आपके नेतृत्व में भारत का एक राज्य 'बिहार' में हुए विधानसभा चुनाव में शानदार जीत के लिए बधाइयां, आपके नेतृत्व में 'बिहार' भारत के मानचित्र में सुंदरता व औद्योगिक विकास में सर्वोपरी होगा, ऐसा हम भारतीयों को विश्वास है।
माननीय मोदी जी! आपके नेतृत्व में भारत सरकार के कार्यों में GOVERNMENT OF BHARAT लिखना शुरू हुआ है, उसके लिए आपको कोटिश: धन्यवाद!
निवेदन यह है कि अब विश्व के मानचित्र में, जहां हमारे देश का नाम INDIA लिखा हुआ है, वहां BHARAT लिखा जाए, साथ ही भारत में 'गौमाता' को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान प्राप्त हो, ऐसी विनंती..
जय भारत!

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार जैन, मुंबई मो. 9322307908	राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी, कोलकाता मो. 8910628944	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. गोविंद बाहेश्वरी, कोटा मो. 9414183919	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा, कोलकाता मो. 9830224300	पद्मश्री व प्रसिद्ध भजन गायक अनुप जलोटा, मुंबई मो. 9821069089	राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक दिलिप सेन, मुंबई मो. 93228 66476
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री वर्षा मूंधड़ा, कोलकाता मो. 9874272916	पूर्वांचल उपसभापति सुशीला पुगलिया, कोलकाता मो. 8617203712	उपाध्यक्ष कांता नगरानी, आगरा मो. 9837888088	राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री रवि जैन, मुंबई मो. 8108843571	उत्तरांचल उप सभापति पूरण डावर, आगरा मो. 9837065440	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक अरुण मूंधड़ा, इंदौर, अमेरिका मो. 01(919)610-7106	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक किशोर जैन, लंदन, यूके मो. 044 (770) 3827593

प्रकल्प प्रमुख

राष्ट्र सेविका किरण लाहू, दिल्ली मो. 9871605944	प्रसिद्ध उद्योगपति प्रकाश विधानी, दिल्ली मो. 7895815961	पूर्व अध्यक्ष NICS, Bharat ममता बिश्नानी, कोलकाता मो. 9831099551	मिसेस भारत मुनिवर्स सपना मोहता, खामगांव मो. 8989919898	मिसेस भारत मुनिवर्स सिद्धि जोहरी, जोधपुर मो. 7023043164	प्रसिद्ध उद्योगपति व ब्लॉगर अदा गट्टानी, उदयपुर मो. 9314664412	प्रसिद्ध उद्योगपति संगीता बिश्नानी, धुलवाल मो. 9822536111
सुरेश भुंदड़ा, संबलपुर मो. 9437061417	नंदकिशोर बड़ेवरी, ढेंकनाल मो. 9437074044	घनश्याम पेड़ीवाल, भुवनेश्वर मो. 9437086896	सुशील राठी, बालासोर मो. 9437559297	सुनील कोठारी, कटक मो. 9338104702	दिनेश करनानी, बालासोर मो. 9937212483	

और विश्व में फैले भारतीय...

आव्हान: 'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

राष्ट्रीय कार्यालय: बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059
फोन : 022-28509999, ईमेल : mainbharathunfoundation@gmail.com, वेबसाइट : www.mainbharathun.co.in

कोलकाता कार्यालय	उड़ीसा कार्यालय	यूएसए	यूनाइटेड किंगडम
५५९, शोभाराम बैबाक स्ट्रीट, १ तला, मारुधरी बालिका स्कूल के सामने, अनु पेसा के पास, बाबाजार, कोलकाता, प, बंगाल, भारत- 700007 फोन : 033-71481571	सुरेश मुंद्रा नौपाड़ा, पो. खेतराजपुर, जिला-संबलपुर, उड़ीसा, भारत- 768003 मो. 9437061417	5501 रीजेंसी ब्रुक्स, सुगर लैंड, मेट्रो ह्यूस्टन, TX, यूएसए- 77479 फोन: +1-919-610-7106 (USA) ईमेल: mundra.arun@gmail.com	76 रोक्नेब ग्रोव्स, लीसेस्टर, LE4 7GT, यूके फोन: + 44 7703827595 ईमेल: kishorjain@hotmail.co.uk

भारत के राष्ट्रपति कार्यालय से मिला उत्तर

महोदय/ महोदया
Sir/Madam,

कृपया उपर्युक्त विषय पर भारत के राष्ट्रपति जी को संबोधित स्वतः स्पष्ट याचिका उपयुक्त ध्यानाकर्षण के लिए संलग्न है। याचिका पर की गई कार्रवाई की सूचना सीधे याचिकाकर्ता को दे दी जाये।
Attached please find for appropriate attention an e-mail petition addressed to the President of India which is self explanatory. Action taken on the petition may please be communicated to the petitioner directly.
सादर,
Regards,

(अशोक कुमार)
(Ashok Kumar)

अवर सचिव
Under Secretary
राष्ट्रपति सचिवालय
President's Secretariat
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली
Rashtrapati Bhavan, New Delhi

नोट 1 : याचिकाकर्ता से अनुरोध है कि मामले में आगे जानकारी के लिए प्रेषिती (जिसे याचिका अग्रेषित की गई है),से सीधे संपर्क करें।
Note 1 : Petitioner is requested to liaise with the addressee(to whom the petition has been forwarded) directly for further information in the matter.
नोट 2 : याचिकाकर्ता अपनी याचिका/शिकायत दर्ज करने के लिए पोर्टल https://helpline.rb.nic.in का उपयोग कर सकते हैं।
Note 2: Petitioner may use portal https://helpline.rb.nic.in for submitting his/her petition/ grievance.

आचार्य श्रीमद्विजय ऋषभचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. का संक्षिप्त जीवन वृत्त

राजस्थान में जालौर के सियाणा नगर में वि.संवत २०१४ की ज्येष्ठ सुदी सप्तमी तद्नुसार ४ जून १९५७ को आपका जन्म हुआ। आपका नाम नामकरण मोहनलाल हुआ।

● पिताश्री मगराजजी अपने दो पुत्रों एवं पुत्री के बाल्यकाल में ही स्वर्गवासी हो गए। माता श्रीमती रत्नादेवी ने अपनी संतानों को श्रेष्ठ संस्कार दिए व स्वयं भगवती दीक्षा लेकर साध्वी श्री पीयूषलताश्री जी म. सा. कहलाईं। बड़े भाई श्री नथमलजी ने भी भी आचार्य भगवंत श्री विद्याचंद्रसूरीश्वरजी म. सा. के करकमलों से प्रवज्या ग्रहण की व आगे चलकर अर्हतध्यानयोगी आचार्य श्री रवीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के नाम से विख्यात हुए।

● श्री मोहनलाल को बाल्यकाल में ही आचार्य श्री विद्याचंद्रसूरीश्वरजी म. सा. का सानिध्य प्राप्त हुआ। आचार्यश्री ने आपको मोहनखेड़ा तीर्थ पर द्वितीय ज्येष्ठ सुदी १० दिनांक २३ जून १९८० को भगवती दीक्षा प्रदान कर संयम जीवन का मार्ग प्रशस्त किया।

● आपने आचार्य तथा वरिष्ठ मुनि भगवंतों के सानिध्य में रहकर साधु जीवन के आचार सीखे, धार्मिक साहित्य, व्याकरण, न्याय, आगम आदि का अध्ययन किया। वरिष्ठ मुनि भगवंतों के साथ विभिन्न स्थानों पर चातुर्मास किये।

● वास्तुशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, मंत्रविज्ञान आयुर्वेद, शिल्पविज्ञान, योगसाधना आदि आपके अध्ययन के मुख्य विषय रहे। ज्योतिष का गहन अध्ययन होने के कारण ज्योतिष सम्राट कहलाए। आपने कई बार सटीक भविष्यवाणियां भी कीं।

● राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र में विचरण कर आपने जैन धर्म तथा गुरुगच्छ की प्रभावक प्रभावना की। आपने आचार्य श्री विद्याचंद्रसूरिजी, आचार्य श्री हेमेंद्रसूरिजी, आचार्य श्री रवीन्द्रसूरिजी म.सा.के सानिध्य में धर्म प्रभावना के कार्य किये।

● श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ पर वैशाख शुक्ल १२ सं. २०७४ दिनांक ७ मई २०१७ को आपको आचार्य पदवी प्रदान की गई व आप सौधर्मवृहत्तगच्छीय आचार्य दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेंद्रसूरीश्वरजी महाराज साहब के अष्टम पट्टधर बने।

● आचार्य श्री ऋषभचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. ने साहित्य में भी अपना योगदान दिया। आपके उपन्यास कहानी संग्रह व स्तुति काव्य आदि प्रकाशित हुए हैं। 'हमारी आचार्य परंपरा' में आपके सौधर्मवृहदगच्छीय परम्परा का विवरण दिया है। आपके मार्गदर्शन में दादा गुरुदेव रचित 'अभिधान राजेंद्र' का परिमार्जित संस्करण शीघ्र प्रकाश्य है।

● मुनिराज श्री पीयूषचंद्रविजयजी म. सा., मुनिराज श्री रजतचंद्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जिनचंद्रविजयजी म. सा., मुनिराज जीतचंद्रविजयजी म.सा., मुनिराज श्री जनकचंद्रविजयजी म. सा., मुनिराज श्री जिनभद्रविजय जी म.सा. आपके शिष्य हैं, इनके अतिरिक्त आपने साध्वी श्री तत्वत्रयाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री गोयमरत्ना श्री जी म. सा., साध्वी श्री व हर्षितगुणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री हितरत्ना श्री जी म.सा. को दीक्षा प्रदान की है।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के विकास में आपका योगदान अविस्मरणीय रहा। आपकी प्रेरणा से तीर्थ में नए भवनादि बने तथा तीर्थ का चहुंमुखी विकास हुआ।

मानवसेवा व जीवदया में आपकी विशेष अभिरुचि रही। आपकी प्रेरणा से गौशालाओं, चिकित्सालय तथा विभिन्न विद्यालयों की स्थापना हुई।

संवत २०७८ की वैशाख सुदी १०, दिनांक ४ जून २०२१ को आपका देवलोकगमन हुआ। श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में आपका समाधि स्थल निर्माणाधीन हैं।

वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है
Kanhaiyalal Baid
9426885050 | 9376885050
SUMAN PLASTICS
SHOP OF: PACKING MATERIALS
519, Shiv Darshan Market, Nr. Rohit Market,
Ring Road, Moti Begumwadi, Surat, Bharat - 395003

श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन गुरुकुल

आचार्य देव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की अभीप्सा थी कि समाज के बच्चों हेतु शिक्षण की अच्छी व्यवस्था हो तथा उनको लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी दी जाये। वि.सं. २०१२ की ज्येष्ठ पूर्णिमा को लगभग १८ वर्षों के पश्चात् श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. मोहनखेड़ा पधारे, उस समय लगभग चार हजार श्रावक उनकी अगवानी व प्रवचन का लाभ लेने के लिए यहाँ आये थे। गुरुदेव के उपदेश से प्रेरित हो तत्काल एक गुरुकुल प्रारंभ करने का निश्चय कर 'राजगढ़' नगर में एक गुरुकुल की स्थापना की गई, मगर गुरुकुल को 'मोहनखेड़ा' तीर्थ में ही स्थापित करने के मंतव्य से इसे बंद कर दिया गया, दुर्भाग्यवश सं. २०१७ में पूज्य गुरुदेव का स्वर्गवास हो गया एवं उनका स्वप्न अधुरा रह गया। गुरुदेव की इस इच्छा को उनके पट्टाधिकार श्री विद्याचन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. ने साकार किया और श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में संवत २०३५ की ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दि. ३१ मई १९७९ को श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन गुरुकुल की स्थापना की गई। गुरुकुल के बच्चों का लौकिक अध्ययन 'राजगढ़' के शासकीय विद्यालय में होता था, प्रारंभ में इस गुरुकुल में केवल छठवीं से आठवीं तक के बच्चों को प्रवेश दिया जाता था, मगर वर्तमान में कक्षा दस तक के बच्चों को प्रवेश दिया जाता है।

नियमित दिनचर्या, धार्मिक शिक्षण, देवदर्शन व जैन मान्यताओं का दैनिक जीवन में पालन आदि इस गुरुकुल की विशेषताएं है। गुरुगच्छ की शोभा बढाने वाले पूज्य मुनि प्रवर श्री जिनेन्द्रविजयजी म.सा., श्री पीयूषचन्द्र विजयजी म.सा. श्री दिव्यचन्द्रविजयजी म.सा., श्री रजतचन्द्र विजयजी म.सा. आदि गौरवशाली गुरुकुल के विद्यार्थी रहे हैं। प्रारंभ में यह गुरुकुल एक अन्य भवन में चलता था, मगर बाद में इसे सुविधाजनक बनाने हेतु श्री मोहनविहार में स्थानांतरित किया गया। गुरुकुल भवन विविध सुविधाओं से युक्त है, तीर्थ की भोजनशाला में ही बच्चों के लिए नौकारसी एवं भोजन की व्यवस्था है, दोपहर को नाश्ता व सूर्यास्त पूर्व दूध गुरुकुल में ही दिया जाता है। धार्मिक शिक्षण हेतु प्रथम से शिक्षक की नियुक्ति की गयी है, बच्चों को वर्ष में एक या दो बार धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण हेतु ले जाते हैं। गुरूकुल हेतु एक नये व अधिक सुविधाजनक भवन बना है, इस हेतु कार्तिक सुदी १३ संवत २०६० दि. ६ नवम्बर २००३ को भूमि पूजन कार्यक्रम तपस्वी मुनिराज श्री जयशेखर विजयजी म.सा. व इसके प्रेरक ज्योतिष सम्राट मुनिराज श्री ऋषभचन्द्र विजयजी म.सा. की निश्रा में किया गया था। भवन का निर्माण 'भीनमाल' निवासी शा. दलिचंदजी फूलचंदजी तातेड परिवार के विशिष्ठ सहयोग से निर्मित किया गया।

गुरुसप्तमी के पावन पर्व पर विश्वप्रसिद्ध मोहनखेड़ा तीर्थ में सभी जैन धर्मावलम्बियों का स्वागत है

भंवरलाल सरेमलजी कोठारी
Mob No: 9892000220
RSBL
RIDDISIDDHI BULLIONS LTD
द इम्पेरिअल नार्थ टॉवर, 3505, 35वां माला, बालकृष्ण नकाशे मार्ग, एम.पी. मिल कम्पाउण्ड, ताडदेव, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत-400034
022 6124 5506, www.rsbl.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

गुर्वावली

गुरुदेव धनचंद्रसूरीश्वर जी म.सा. का संक्षिप्त परिचय

वि.स. १८९६ के चैत्र सुदी ४ को किशन गढ़ (राज) में शा. ऋध्दिकरण जी की धर्म पत्नी अचला देवी की रत्न कुक्षी से आपश्री का जन्म हुआ। नामकरण हुआ - धनराज।

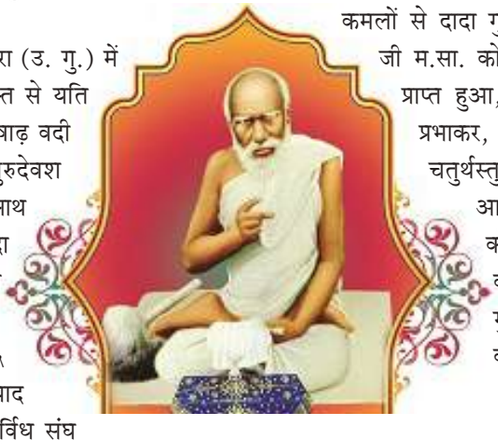

सं. १९१७ के वैशाख सुदी ३ को धानेरा (उ. गु.) में यतिवर्य श्री लक्ष्मी विजय जी के वरदहस्त से यति दीक्षा ग्रहण की, वि. स. १९२५ के आषाढ़ वदी १० को जावरा (म.प्र.) में पूज्यपाद गुरुदेवश श्रीमद्विजय राजेंद्र सूरीश्वर जी म.सा. के साथ क्रियोद्धार एवं संवेगी दीक्षा ग्रहण कर दादा गुरुदेव श्री के प्रथम शिष्य बने। दादा गुरुदेव श्री के वरद हस्त से खाचरौद (म. प्र.) में सं. १९२५ के मगसर सुदी ५ को उपाध्याय पद से अलंकृत हुए, पूज्यपाद गुरुदेवेश के स्वर्ग गमन के पश्चात चतुर्विध संघ की साक्षी में जावरा (म.प्र.) में सं. १९६५ के ज्येष्ठ सुदी ११ को सूरीपद से मंडित हुए। पूज्यपाद धनचंद्रसूरीश्वर जी म.सा. के शुभ सानिध्य में अनेक प्रतिष्ठांजन शलाका छ:री पालित संघ, उपधान आदि अनेक शासन प्रभावक कार्य संपन्न किए, विशेषतः मारवाड़ बरलुट, काणोदर, मण्डवारिया आदि प्रतिष्ठायें ऐतिहासिक रही, आपके कर कमलों से दादा गुरुदेव श्री के प्रिय शिष्य पन्यास श्री मोहनविजय जी म.सा. को वि.सं. १९६६ पौष सुदी ९ को उपाध्याय पद प्राप्त हुआ, श्री हंसविजय जी आदि ४ शिष्य हुए, स्तुति प्रभाकर, जन मांसभक्षण निषेध, प्रश्नामृत प्रश्नोत्तर तरंग, चतुर्थस्तुतिनिर्णयशंकोद्धार, जैन विधवा पुनर्लग्न निषेध आदि ५० से अधिक ग्रन्थ सर्जन आपकी ज्ञानगरिमा को प्रकट करता है, वादियों को शास्त्रार्थ में पराजित कर, तर्कशक्ति, वाद शक्ति, हाजिर जवाबी आदि गुणालंकृत होने के कारण आपने 'चर्चा चक्रवती' को गौरवान्वित किया। पर्युषण महापर्व में वीर जन्म वाचन के दिन सं. १९७७ के भाद्रवा सुदी एकम, सोमवार के दिन रात्रि ८ बजे मरुधर की धर्मधरा बागरा (जि. जालोर) में आपश्री का प्रयाण हुआ, चर्चा चक्रवर्ती गुरुदेव श्री की साहित्य यात्रा शासन प्रभावना ने गुरुगच्छ की कीर्ति में चार चाँद लगाये हैं।

आचार्य देव श्रीमद्विजय हेमेन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. गुरूगच्छ के चतुर्थ आचार्य का जीवन परिचय

वि. सं. १९७५ के माघ वदी ६ को जालोर जिले के बागरा ग्राम में श्री ज्ञान चंद जी पोरवाल की धर्मपरायणा पत्नी सुश्राविका उज्जम बाई ने बालक पूनम चंद को जन्म दिया।

वि.सं. १९९९ आषाढ़ सुदी २ को भीनमाल में थराद के महान उपकारी मुनिराज श्री हर्षविजय जी म. सा. के कर कमलों से भागवती दीक्षा ग्रहण कर मुनिराज श्री हेमेंद्र विजयजी म.सा. बने।

आचार्य देव श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. ने उप स्थापना योगोद्वहन करवाकर वि.सं. २००१ माघ सुदी ६ को आहोर (राज.) में वृहद् दीक्षा प्रदान की।

पंचम पट्टधर आचार्य देव श्रीमद्विजय विद्याचंद्रसूरीश्वर म.सा. के स्वर्गावास के पश्चात् चतुर्विध संघ की साक्षी में त्रिस्तुतिक गच्छ की राजधानी आहोर (राज.) वि.सं. २०४० की माघ सुदी ९ को आचार्य पद से अलंकृत हुए।

भारत के उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण अडवाणी द्वारा जैन भारत महामंडल के तत्वाधान में मुंबई के आजाद मैदान में 'राष्ट्रसंत शिरोमणी' पद प्रदान किया गया। नवकार का जप, आयम्बिल का तप, संयम का खप इस त्रिपदी को अपना जीवन मंत्र बनाया, प्रतिदिन नवकार मंत्र की ४० माला नित्य गिनना व आयम्बिल आपका प्रिय तप था, वर्धमान तप ओली के आप आराधक रहे, मुनिराज श्री प्रितेश चंद्र विजय जी, मुनिराज श्री चंद्रयशविजय जी म.सा., मुनिराज श्री प्रितियशविजय जी म.सा. आदि ३ शिष्य हैं।

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ के वर्तमान स्वरूप के आप प्रेरक हैं, आपके नेतृत्व में गुरु पुण्यभूमि को अत्यधिक प्रख्याति मिली।

श्री पार्श्वनाथ राजेंद्र धाम नाकोड़ा आदि अनेक नवोदित तीर्थ आपकी शुभ प्रेरणा से स्थापित हुए।

श्री राजेंद्र भवन, श्री राजेंद्र विहार पालीताणा, श्री राजेंद्र विद्या भवन शंखेश्वर के आप मार्गदर्शक रहे। अनेक प्रतिष्ठांजनशलाका, दीक्षा, उपधान तप, नव्वाणु यात्रा, सामूहिक चौमासी, छःरिपालित संघ आपकी निर्मल निश्रा में साकार बने हैं। म.प्र., गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश आदि प्रांतों में आपका विचरण रहा। वि.सं. २०६७ भाद्रपद वदी ५ को श्री सिद्ध गिरिराज की शीतल छाया में श्री राजेंद्र भवन पालीताणा में आपका स्वर्गवास हुआ। भाद्रपद वदी ६ को श्री मोहनखेड़ा तीर्थ में आपका अग्निसंस्कार हुआ। आप गुरुगच्छ के चतुर्थ आचार्य थे, जिनका अग्नि संस्कार श्री मोहनखेड़ा की पुण्यभूमि पर हुआ।

शस्त्र को शास्त्र में बदला गुरुदेव राजेन्द्रसुरीश्वर जी ने

'भारत' का अतीत सशक्त है, उज्जवल है, प्रेरक भी-सार्थक भी

संसार चक्र में होने वाली घटनाएँ भी मनुष्य के जीवन पर विशेष प्रभाव डालती हैं लेकिन विरले महापुरुष ही अपने जीवन में उन घटनाओं को बदलने में सक्षम होते हैं, जब हम किसी महापुरुष का मूल्यांकन करते हैं तो हमारे सम्मुख उसके जीवन की और उसकी समकालीन घटनायें होती हैं, उसने अपने युग के साथ क्या व्यवहार किया, उसे कितना मोड़ा, कितना सहा और कितना पहचाना, इसका लेखा-जोखा ही उसके व्यक्तित्व को प्रकट करता है, इस दृष्टि से जब हम राजेन्द्रसूरिजी के व्यक्तित्व की समीक्षा करते हैं तब हमें लगता है कि उनका व्यक्तित्व जागतिक था, आप किसी एक समाज या राष्ट्र तक सीमित नहीं थे, खुले मन और मस्तिष्क के श्रमण थे, आपके कृतित्व में कोई ग्रन्थि नहीं थी, संकल्प की अद्वितीय अविचलता थी और जिस बात को भावी पीढ़ी के कल्याण में देखते थे, उसके करने-कराने में न तो कोई विलम्ब करते थे और न ही कोई भय रखते थे, अभय आपके चरित्र का महत्वपूर्ण अंग था। राजेन्द्रसूरिजी कहा करते थे कि यदि साधन स्वस्थ, पावन, सम्यक और सन्तुलित हैं और उनका संयोजित उपयोग हुआ है तो फिर सिद्धि की कोई चिन्ता करनी ही नहीं चाहिए, वह तो मिलेगी ही, इस जीवन-दर्शन के साथ सूरिजी ने एक हद में अनहद काम किया, बिन्दु रहकर सिन्धु जितना काम, उन्हें तो कोई कीर्ति-कामना तो थी नहीं, वे निष्काम और अप्रमत्त चित्त थे, एक सम्पूर्ण क्रान्ति के लिए सम्पूर्णत: व्यक्तित्व के रुप में हम 'श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरि जी' को देख सकते हैं। सूरिजी को विश्वपुरुष के रुप में प्रतिष्ठित करने वाला एक तथ्य है उनकी क्रान्तिधर्मिता। एक आत्मार्थी साधु होने के बावजूद सूरिजी किसी पारम्परिक धातु से नहीं बने थे, वे जिस धातु से बने थे, वह खरी और कालसह्य थी, कथनी और करनी की एकता, जो उनके समकालीन भारतीय चरित्र में उन दिनों घट रहा था, सूरिजी के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण अंश था, उन्होंने जब यति क्रान्ति के लिए अपनी 'नौ सूत्रीय' योजना घोषित की तो पहले अपने जीवन में उसे ''सम्पूर्ण क्रियोद्धार'' के रुप में लागू किया, उनका जीवन एक खुला ग्रन्थ था, वहाँ कोई तथ्य प्रच्छन्न नहीं था, जब वे स्वयं पालखी से नीचे आ गये, तब उन्होंने यतियों को पालखी से उतर कर जीने की बात कही, उनकी क्रान्तिधर्मिता कोई बकवास नहीं थी, वह तो चारित्रिक थी। सूरिजी की क्रान्ति का सबसे जीवन्त पक्ष चरित्र है, धर्म के क्षेत्र में जिस चरित्र रचना पर सूरिजी ने बल दिया, समाज-रचना के सन्दर्भ में उतना ही बल उनके समकालीनों ने भी दिया। सूरिजी ने उन यतियों को, जो चारित्र, सम्यकत्व और औचित्य से स्खलित थे, स्थिरीकृत किया और आगामी क्रान्ति के लिए लोकमन और मस्तिष्क की रचना की। सूरिजी का चरित्र चंचल, गहन और अडिग था,

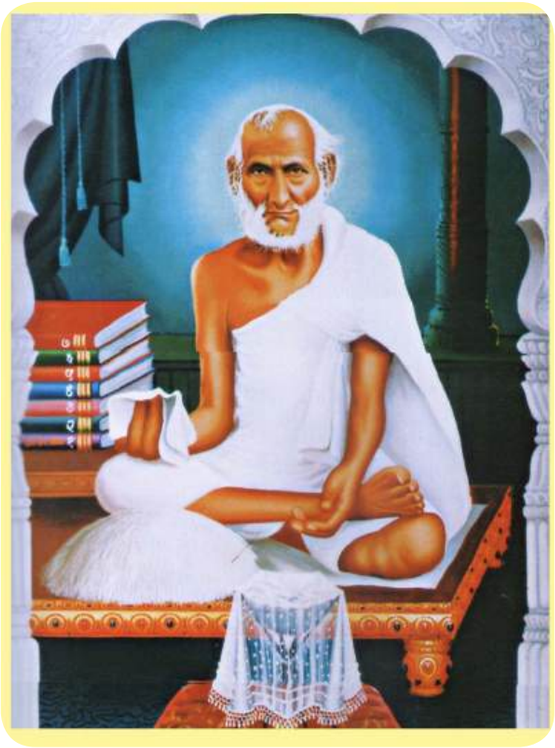

वे प्रतिक्षण अप्रमत्त और सावधान सन्त थे। सूई की नोंक तो बड़ा परिमाण है, वे कहीं भी चंचल नहीं थे। गाम्भीर्य और 'जो कहना, वह करना' उनके व्यक्तित्व के प्रधानअंश थे। धर्म और समाज के हर मोर्चे पर सूरिजी की सफलता का कारण उनका लौह व्यक्तित्व ही था, सूरिजी का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उन्होंने भारतीय लोकजीवन में अतीत को,जो उखड़ने लगा था, पुन: प्रतिष्ठित किया और उनकी उज्ज्वलताओं को न केवल भारतीयों के समक्ष वरन् विदेशियों के समक्ष भी सप्रमाण प्रस्तुत किया, उन्होंने अपने समकालीन जीवन में यत्र-तत्र सेंध डालकर यह हुंकार भरी कि जो अतीत को नकारा जा रहा है, वह व्यर्थ है, भ्रामक है। 'भारत' का अतीत सशक्त है, उज्ज्वल है, प्रेरक और सार्थक है', वह केवल देश के बुझते हुए दीयों में ही नहीं, वरन् विदेशों के निष्प्राण दीपों में भी जान डाल सकता है।

सूरिजी ने इस पर की कौन-कहाँ-क्या कर रहा है? बिना ध्यान दिये अपना कर्त्तव्य किया और चारित्रिक प्रामाणिकता और शुचिता को लाने के अपने मिशन में वे पूरी ताकत से जुटे रहे। ''तीनथुई-क्रान्ति,'' जो है धार्मिक, किन्तु वह भी उनकी इसी व्यापक क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण भाग है, इसके द्वारा उन्होंने लोगों को तर्क संगत बनाया और उन्हें अन्धविश्वासों से मुक्त करवाया, उनका कहना था कि भारतीय संस्कृति ने जितनी विविधताओं को पचाया और आत्मसात किया है, संसार की ऐसी कोई संस्कृति नहीं है जो इस तरह विषपायी व अमृतवर्षी हो, उन्होंने जहर पिया, अमृत बाँटा, काँटे सहे और फूल दिये, यही उनके मृत्युन्जयी होने का एक बहुत बड़ा कारण है। श्रमण संस्कृति के उज्ज्वल ओर जीवंत प्रतीक के रूप में सूरिजी ने विश्व संस्कृति को जो दिया है, वह अविस्मरणीय है और रहेगा। सूरिजी के समग्र जीवन ने अपने तपोनिष्ठ आचरण से शस्त्रकारों को शास्त्रागारों में बदला हो, संचार और यातायात की असुविधाओं के होते हुए भी जिसने अपनी चारित्रिक निर्मलताओं से अन्धविश्वासों, अरक्षाओं, रूढ़ियों और अन्धी परम्पराओं, घटती मानवता को पैदल घूम-घूमकर निर्मल और निष्कलंक बनाया हो,उसके प्रति यदि वन्दना में हमारी अन्जलियाँ नहीं उठती हैं और उनके जीवन से यदि हम प्रेरणा नहीं लेते हैं तो न तो हम से बड़ा कोई कृतघ्न होगा और न कोई होगा अभागा...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के सानन्द सम्पन्न हुए त्रिवार्षिक चुनाव

नयी दिल्ली: गत रविवार दिनांक ३० नवम्बर २०२५ को तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी एवं महिला महासभा) के त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुये। तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के उपकुलपति वी. के. जैन ने मंच की कमान अपने हाथों में लेते हुये सर्वप्रथम मंच पर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष गजराज जैन गंगवाल, महासभा के महामंत्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या, कोषाध्यक्ष पवन जैन गोधा, श्रुत संवर्धिनी महासभा के महामंत्री डॉ. निर्मल कुमार जैन, श्रुत संवर्धिनी महासभा के कार्याध्यक्ष अरविन्द लुहाड़िया एवं तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति सुरेश जैन लुहाड़िया जी आदि को मंच पर आमंत्रित किया।

आदरणीय श्री गजराज जैन गंगवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि आप सभी माननीय अतिथिगण, पदाधिकारीगण, सभी प्रांत एवं क्षेत्रीय प्रतिनिधि और मेरे प्रिय समाज बंधुओ, श्री भारतवर्षीय जैन दिगम्बर महासभा का निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने जाने पर और इस पावन स्थल में आप सबके मध्य उपस्थित होकर मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ। जय भारत!

मंगलाचरण तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। दीप प्रज्वलन महासभा के पदाधिकारियों के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

महासभा के महामंत्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या ने विगत वर्ष के महासभा के त्रिवार्षिक केन्द्रीय चुनाव सम्पन्न हुये थे, इस अवधि में जो कार्य हुये उसका विवरण सभी के समक्ष पढ़कर सुनाया।

श्रुत संवर्धिनी महासभा के महामंत्री डॉ. निर्मल जैन ने श्रुत संवर्धिनी महासभा के उद्देश्यों की जानकारी देते हुये सभी से शिक्षा के क्षेत्र में बढ़-चढ़कर सहयोग करने की अपील की। त्रिवार्षिक चुनाव की प्रक्रिया मुख्य चुनाव अधिकारी सुरेश लुहाड़िया जैन, मुरादाबाद (कुलाधिपति, तीर्थंकर महावीर युनिवर्सिटी, मुरादाबाद), गजेन्द्र बज, चार्टड एकाउंटेंट एवं अनुज जैन, एडवोकेट दिल्ली नई दिल्ली द्वारा सम्पन्न की गई। तत्पश्चात चुनाव अधिकारियों ने चुनाव प्रक्रिया शुरू की तथा निम्नलिखित पदाधिकारियों को सर्वसम्मति से निर्वाचित किया:

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा (धर्म संरक्षिणी)

क्र.सं. नाम स्थान नामांकित पद

श्री गजराज जैन गंगवाल	दिल्ली	राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री प्रकाशचन्द जैन बड़जात्या	चैत्रई	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री राजेश जैन बी शाह	अहमदाबाद	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री अजित जैन चादुंवाड़	दुधनोई	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री अशोक जैन छाबड़ा	गुवाहाटी	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

शेष पृष्ठ १७ पर ...

गौ माता अन्नपूर्णा देवी है कामधेनु है। मनोकामना पूर्ण करने वाली है।
Saraf Kantilal Vimalkumar
91.6 Hallmark Gold Jewellery & Silver Ornaments
CHHAJED JEWELLERS
PURE & PRECIOUS
BABULAL CHHAJED JI KA DIVYA AASHISH
Kantilal Chhajed - 9425103380
Vimal Chhajed - 9425103370
Alok Chhajed - 9893013233
Saurabh Chhajed - 9630777097
CA Anurag Chhajed -9685816269
Rohan Chhajed - 9479660009
130, Chandni Chowk Corner, Ratlam, Madhya Pradesh, Bharat- 457001 Ph: 07412-234986, 231137

पृष्ठ १६ से ...

श्री सुन्दरलाल जैन डागरिया	उदयपुर	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री अनिल जैन लुहाड़िया	मुरादाबाद	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री अरविन्द जैन लुहाड़िया	दिल्ली	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री मनोज जैन काला	गुवाहाटी	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री कमल बाबु जैन	जयपुर	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री हेमचन्द्र जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पवन जैन गोधा	दिल्ली	राष्ट्रीय महामंत्री
श्री प्रमोद जैन	बड़ौत	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री संदीप जैन	गुड़गांव	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री अशोक जैन जेतावत	उदयपुर	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री सजय जैन पाटनी	रांची	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री प्रकाश जैन वोहरा	दिल्ली	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
सी. ए. विनीत जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय सहकोषाध्यक्ष
श्री कमल जैन	गुवाहाटी	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री अशोक जैन बड़जात्या	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री योगेश जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री विजय जैन (चांदी वाले)	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री राजेश जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री विकास जैन	बड़ौत	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री स्वराज जैन	दिल्ली	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री त्रिलोक जैन	बड़ागांव	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री नवीन जैन शास्त्री	बड़ागांव	राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
श्री एम. के. जैन	चेन्नई	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (महिला) महासभा

श्रीमती सरिता महेन्द्र कुमार जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीमती रंजना बाकलीवाल राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, श्रीमती संध्या जैन राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, श्रीमती मीना झांझरी संयुक्त कार्याध्यक्ष, श्रीमती सुमन जैन संयुक्त कार्याध्यक्ष, श्रीमती निशा जैन उपाध्यक्ष, श्रीमती सुधा जैन उपाध्यक्ष, श्रीमती शिखा जैन उपाध्यक्ष, श्रीमती माधवी जैन उपाध्यक्ष, श्रीमती अनिता जैन उपाध्यक्ष, श्रीमती नीलम जैन उपाध्यक्ष, डॉ. ज्योत्स्ना जैन महामंत्री, श्रीमती रिचा जैन संयुक्त महामंत्री, श्रीमती इंद्रा जैन मंत्री, श्रीमती अनु जैन कोषाध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा जैन केन्द्रीय सदस्य, श्रीमती रजनी जैन केन्द्रीय सदस्य के नियुक्ति हुयी है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

कर्नाटका रक्षण वेदिके द्वारा मारुति नगर में ७०वां कर्नाटक राज्योत्सव हर्ष उल्लास एवं सेवा के साथ मनाया गया। करवे के प्रदेश अध्यक्ष शिवरामे गौड़ा, मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत, प्रभाकर एवं करवे के अन्य कार्यकर्ताओं ने मां भुवनेश्वरी देवी की पूजा-आरती कर ध्वजारोहण किया। कार्यक्रम स्थल पर बच्चों में शिक्षण सामग्री वितरण, महिलाओं में साड़ियां वितरण, अन्नदान, निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों जरूरतमंद लाभान्वित हुए। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

अंबेडकर महाविद्यालय नागरभावी में क्रिकेट स्पर्धा हॉस्टल क्रिकेट लीग २०२५ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी विद्यार्थी मित्र श्री महेन्द्र जी मुणोत ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए अपने वक्तव्य में कहा, 'टोक्यो ओलंपिक, पैरालंपिक १९वें एशियन गेम्स, आईसीसी एकदिवसीय महिला क्रिकेट विश्व कप में भारत के खिलाड़ियों ने ऐतिहासिक प्रदर्शन करके दुनिया को यह दिखा दिया कि यह नया भारत है, युवाओं के सपनों का भारत है, नित्य नई ऊंचाइयाँ छूने वाला भारत है.' खिलाड़ियों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

प्रकृति इवेंट्स द्वारा श्रीनगर स्थित सरकारी विद्यालय में बाल दिवस के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी विद्यार्थी मित्र श्री महेन्द्र जी मुणोत एवं अन्य. श्री मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा, 'बच्चे राष्ट्र के भविष्य हैं, उन्हें अच्छे संस्कारों से पोषित करें।'

अमृतधारा गौशाला कग्गलीपुरा में एक शाम गौ माता के नाम विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। समारोह अध्यक्ष युवा समाज सेवी गौप्रेमी महेन्द्र मुणोत, मुख्य अतिथि राजस्थान पत्रिका बेंगलूरु के संपादकीय प्रभारी कुमार जिवेन्द्र झा ने दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

गायिका अनिता जांगिड़ एवं बाल नृत्य कलाकार कल्पना पटेल ने अपनी मनभावन प्रस्तुति से माहौल को भक्तिमय बना दिया। श्री मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा, भारत की आध्यात्मिक संस्कृति के चार आधार हैं- गीता, गायत्री, गंगा और गाय। गौ माता ने मानव जाति को सदैव दिया ही दिया है, गौ सेवा हमारा कर्तव्य है। कुमार जिवेन्द्र झा ने उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि एवं पशुपालन से जुड़े रहकर ही हम सुखमय जीवन जी सकते हैं। गौशाला के अमित शर्मा, संतोष तिवारी, राजण्णा ने अतिथियों एवं सहयोगियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन आर जे. रमसा ने किया।

भुवनेश्वरी शाला वाहन चालक संघ द्वारा विजयनगर में ७०वें कन्नड़ा राज्योत्सव के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत, कांग्रेस नेता श्रीनाथ, भाजपा नेता वेंकटेश ने मां भुवनेश्वरी की पूजा-आरती कर ध्वजारोहण किया एवं अन्नदान कार्यक्रम में सेवा प्रदान की. आयोजकों ने अतिथियों को सम्मानित किया।

जिंके उद्यान चामराजपेट में क्षेत्र के नागरिकों द्वारा कर्नाटक राज्य उत्सव के उपलक्ष में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन कर उन्हें प्रमाण पत्र वितरित करते हुए मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र जी मुणोत।

देशी गायींना "राज्यमाता-गोमाता" घोषीत करण्याबाबत

महाराष्ट्र शासन
कृषि, पशुसंवर्धन, दुग्धव्यवसाय विकास व मत्स्यव्यवसाय विभाग,
शासन निर्णय क्रमांक: पविआ-११२४/प्र.क्र.२४४/पदुम-३
मादाम कामा रोड, हुतात्मा राजगुरू चौक
मंत्रालय विस्तार, मुंबई-४०००३२.
दिनांक : ३० सप्टेंबर, २०२४.

प्रस्तावना :-

प्राचीन काळापासून मानवाच्या दैनंदिन जीवनामध्ये गायीचे अनन्यसाधारण महत्त्व आहे. वैदिक काळापासून गायीचे धार्मिक, वैज्ञानिक व आर्थिक महत्त्व विचारात घेऊन त्यांना "कामधेनू" असे संबोधण्यात येते. राज्यातील वेगवेगळया भागात वेगवेगळया देशी जातींच्या गायी आढळतात. (उदा. मराठवाडा विभागात देवणी, लालकंधारी, पश्चिम महाराष्ट्रामध्ये खिल्लार, उत्तर महाराष्ट्रात डांगी तर विदर्भात गवळाऊ.) तथापि, दिवसेंदिवस देशी गायींच्या संख्येत मोठया प्रमाणात घट होत आहे.

देशी गायीच्या दुधाचे मानवी आहारात पौष्टीकदृष्टया अधिक मुल्य आहे. देशी गायींच्या दुधात मानवी शरीर पोषणासाठी महत्त्वाचे अन्नघटक उपलब्ध असल्याने ते पुर्णअन्न आहे. देशी गायींच्या दुधाचे मानवी आहारातील स्थान, आयुर्वेद चिकित्सा पध्दतीत पंचगव्याचा वापर तसेच सेंद्रिय शेती पध्दतीत देशी गायींच्या शेण व गोमुत्राचे महत्व विचारात घेता, देशी गायींच्या संख्येत होणारी घट ही चिंताजनक बाब ठरत आहे.

उपरोक्त पार्श्वभुमी विचारात घेवून, पशुपालकांना देशी गायींचे पालनपोषण करण्यास प्रेरित करण्याच्या दृष्टीने देशी गायीस "राज्यमाता- गोमाता" घोषित करण्याची बाब शासनाच्या विचाराधीन होती.

शासन निर्णय :-

देशी गायींचे भारतीय संस्कृतीत वैदिक काळापासून असलेले स्थान, देशी गायींच्या दुधाची मानवी आहारातील उपयुक्तता, आयुर्वेद चिकित्सा पध्दती, पंचगव्य उपचार पध्दती तसेच देशी गायींच्या शेण व गोमुत्राचे सेंद्रिय शेती पध्दतीत असलेले महत्वाचे स्थान विचारात घेवून देशी गायींना यापुढे "राज्यमाता-गोमाता" म्हणून घोषीत करण्यास मान्यता देण्यात येत आहे.

सदर शासन निर्णय महाराष्ट्र शासनाच्या www.maharashtra.gov.in या संकेतस्थळावर उपलब्ध करण्यात आला असून त्याचा संकेताक २०२४०९३०१०३०१७४३०१ असा आहे. हा आदेश डिजीटल स्वाक्षरीने साक्षांकित करुन काढण्यात येत आहे.

महाराष्ट्राचे राज्यपाल यांच्या आदेशानुसार व नावाने,

NIWRUTTI
BHAGUJI MARALE

(नि. भा. मराळे)
उप सचिव, महाराष्ट्र शासन

प्रति -

१. मा. मुख्यमंत्री यांचे खाजगी सचिव, महाराष्ट्र राज्य, मंत्रालय मुंबई.
२. मा. उपमुख्यमंत्री (गृह) यांचे सचिव, महाराष्ट्र राज्य, मंत्रालय मुंबई.
३. मा. उपमुख्यमंत्री (वित्त व नियोजन) यांचे खाजगी सचिव, महाराष्ट्र राज्य, मंत्रालय मुंबई.
४. मा. मंत्री (पशुसंवर्धन व दुग्धव्यवसाय) यांचे खाजगी सचिव, महाराष्ट्र राज्य, मंत्रालय मुंबई.
५. अध्यक्ष, महाराष्ट्र गोसेवा आयोग, पशुसंवर्धन आयुक्तालय, औंध, पुणे.
६. आयुक्त पशुसंवर्धन, महाराष्ट्र राज्य, पुणे- ६७
७. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, महाराष्ट्र पशुधन विकास मंडळ, नागपूर
८. सर्व प्रादेशिक सहआयुक्त पशुसंवर्धन
९. सर्व जिल्हा पशुसंवर्धन उपआयुक्त
१०. सर्व जिल्हा पशुसवंर्धन अधिकारी, जिल्हा परिषद
११. अवर सचिव/ कक्ष अधिकारी, पदुम१/२/४/५/१६, कृषि व पदुम विभाग, मंत्रालय, मुंबई
१२. निवडनस्ती (पदुम ३)

प्रत,

संचालक, माहिती व जनसंपर्क, महासंचालनालय यांना प्रसिध्दीसाठी अग्रेषित

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

■ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ■

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

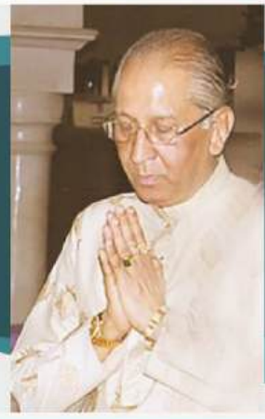

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, चार्टल इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO

जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सुक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में प्रोसिड होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया	चंद्रराज सिंघवी	डॉ. प्रकाश गोलेछा	नरेन्द्र कुमार जैन	बसंत जैन	संजय जैन	सुरेन्द्र कुमार जैन
अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय अध्यक्ष	योजना मंत्री	राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.सि	राष्ट्रीय संगठन मंत्री	कोऑर्डिनेटर	राष्ट्रीय प्रचार मंत्री

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

स्थानकवासी जैन एकता के लिए जैन कॉन्फ्रेंस की स्थापना १९०६ में हुयी थी

अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की स्थापना जैन श्रावकों द्वारा बनाई गई एक विशाल संस्था है, जिसका अतीत बड़ा ही गौरवशाली है। संस्था ने स्थानकवासी समाज को एक करने के साथ ही साधु संगठन को मजबूत करने में बड़ा प्रयास किया। श्रमण संघ का निर्माण 'जैन कॉन्फ्रेंस' के प्रयासों का सुन्दर प्रतिफल है। संस्था ने और भी अनेक कार्य किये हैं, जिन पर सर्व जैन पंथ भी गर्व कर सकता है। यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक संस्था है जिसकी स्थापना १९०६ ई. में हुई थी, संस्था ने समाज को जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया है। 'जैन कॉन्फ्रेंस' स्थानकवासी जैन समाज की आधारभूत और मातृ संस्था है जिसका पूर्व इतिहास भी काफी स्वर्णिम व गौरवपूर्ण रहा है। सभ्यता और संस्कृति के रक्षण के लिए उच्च संस्कारवान, संकल्पशील लोगों का संगठन होना जरुरी है, यह बात जब स्थानकवासी जैन समाज ने अतीत में जब स्वीकार की तो 'जैन कॉन्फ्रेंस' रुपी संगठन का निर्माण हुआ, इस सोच ने आध्यात्मिक श्रमण संघ का गठन करके सभ्यता और संस्कृति के रक्षण का अपना संकल्प पूर्ण किया। आज सारे देश में ११६ वर्षों से यह संगठन विद्यमान है। संगठन की खूबी यह रही है कि समाज के विभिन्न विषयों को समाज के सामने लाकर उनका समाधान प्राप्त करना, इस अर्थ में स्वयंमेव संगठन का प्रतीक बन कर, 'जैन कॉन्फ्रेंस' ने जैन समाज का गौरव बढ़ाया है। 'जैन कॉन्फ्रेंस' ने विगत वर्षों में जैन श्रमणसंघ एवम् स्थानकवासी जैन समाज को हमेशा उन्नति के शिखर पर पहुंचाने में तत्परता दिखाते हुए सक्रिय भूमिका निभाई है।

बत्तीस सम्प्रदाय, अनेक गच्छ-उपगच्छ एवम् सिंघाड़ों में विभक्त, छिन्न-भिन्न स्थानकवासी जैन धर्मावलम्बियों को एकता के सूत्र में निबद्ध करना, कतिपय प्रबुद्धजनों का स्वप्न रहा, उसी का साकार रूप है, 'अखिल भारतीय स्थानकवासी 'जैन कॉन्फ्रेंस' अजमेर वृहद साधु सम्मेलन से पूना साधु सम्मेलन तक के सम्मेलनों की विस्तृत श्रृंखला। जैन कॉन्फ्रेंस के 'एकता' के ऐसे प्रमाण हैं, जो स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय के रुप में अंकित हैं। 'जैन कॉन्फ्रेंस' ने समाज के विभिन्न वर्ग एवम् असहायों को ऊपर उठाने का भी भरसक प्रयास किया है। मुक प्राणी की रक्षा के लिए भी 'जैन कॉन्फ्रेंस' कार्य करती चली आ रही है। संगठन सेवा एवम् संस्कार निर्माण के अनेक आयाम अपने साथ लेकर चलने वाली 'जैन कॉन्फ्रेंस' आज भी स्थानकवासी जैन समाज की प्रतिनिधि संस्था के रुप में अभिव्यक्त हो रही है। एक संक्षिप्त बीज के रुप में प्रारम्भ हुई 'जैन कॉन्फ्रेंस' आज वट वृक्ष का रुप ले चुकी है। संस्था आगे बढ़ रही है, पूर्व में हमारे साधु-साध्वी, अलग-अलग एवम् छोटे-छोटे सम्प्रदायों में बंटे हुए थे और आलोचना-प्रत्यालोचना को धुआँ दे रहे थे, सभी सम्प्रदायों के श्रावक-श्राविकाओं की भी यही स्थिति थी, ऐसे वातावरण में कॉन्फ्रेंस' ने प्रयास करते हुए समाज को एक नई दिशा दी।

वर्तमान घटनाक्रम में भी 'जैन कॉन्फ्रेंस' ने अपने दायित्व को अच्छी तरह निभाकर समाज को खुशहाली प्रदान की है। कॉन्फ्रेंस के गठन के समय अनेक प्रकार की दुविधाएँ और समस्याएँ समाज के सामने थी, उन सभी को संगठन की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए इस संस्था का सफलतापूर्वक निर्माण हुआ, एक समय था जब यह सोचा जा रहा था कि संगठन होगा कैसे? किन्तु जब एक बार संगठन बन गया तो इस बात ने सिद्ध भी कर दिया किया कि 'संघ शक्ति कलयुगै। आज अनेकों उतार-चढ़ावों, झंझावत तूफानों व अपने-परायों से कड़ा मुकाबला करते हुए एक बुहत लम्बा समय तय किया जो अपने आप में एक महान उपलब्धि है, इस सुकार्य तक पहुँचने के लिए अनेक लोगों ने अपना पसीना व पैसा पानी की तरह बहाया, जिसे कभी भी भूलाया भी नहीं जा सकता। संस्था को इस ऊँचाई तक पहुँचाने के लिए प्रारम्भ में जो कार्य हुए वे नींव का पत्थर साबित हुए, जिसे नि:स्वार्थ भाव से पुन: आगे बढ़ाने की आवश्यकता भी है।

गौरतलब है कि संगठन के बिना समाज अधूरा रहता है। 'जैन कॉन्फ्रेंस' श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज की एक संस्था, जिस शेष पृष्ठ २२ पर...

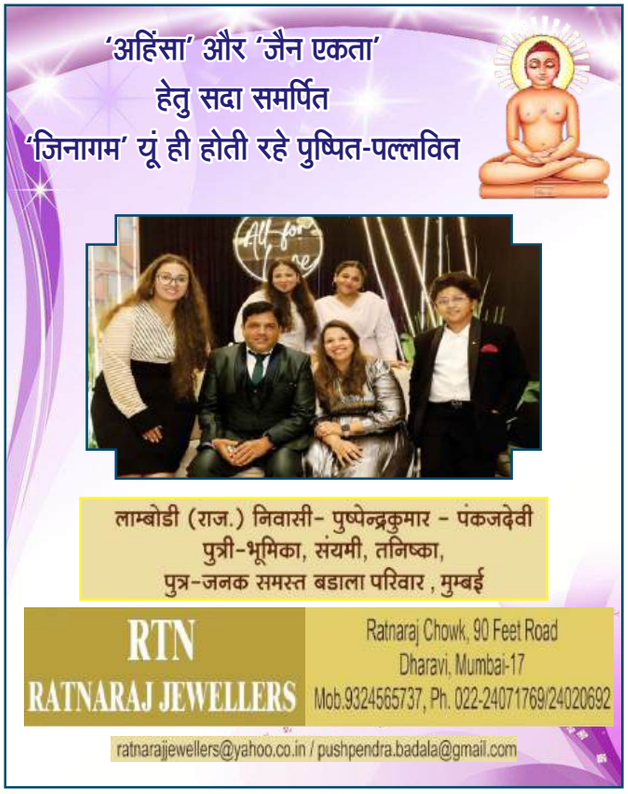

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २१ से ... संस्था द्वारा विगत में अनेक उल्लेखनीय कार्य हुए हैं, जिस कारण सर्वसाधारण समाज में संगठन का भाव समारोपित हुआ। त्यागी वर्ग में भी संयम यात्रा निर्मित अनुकूलता व परस्परता पैदा हुई, यह एक सशक्त प्राणवान संस्था है, इस संस्था ने अनेक जन कल्याण के मंगलमय कार्य किये हैं। नवीन रचनात्मक कार्य करके कीर्तिमान बनाया है। जिनशासन के गौरव में अभिवृद्धि की है। सेवा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान दिया है।

जैन कॉन्फ्रेंस के प्रथम अधिवेशन (1906) में अध्यक्ष रायसाहब चांदमल जी रींया वाले के साथ पाश्चात्य विद्वान डॉ. हर्मन जेकोबी एवं मौरवी दरबार श्री वाघजी बहादुर एवं अमरचन्द जी पीतलिया जैन, केसरीचन्द जी भंडारी जैन, धर्मवीर श्री दुर्लभजी भाई झावेरी जैन आदि

संघ एवम् का संघ संगठन का विगुल बजाकर एकता का सूत्रपात किया है। सामाजिक जीवन में कार्य कर रहे समस्त धर्म स्नेही जन, यदि हिल-मिल कर चिन्तन करते हुए खरा बोलें, मगर खारा न बोलें तो समाज के सम्मुख उपस्थित ५० प्रतिशत प्रश्नों का उत्तर मिल सकता है। अनेक प्रकार के तर्क-कुतर्क से बचकर रचनात्मक कार्यों को गति मिल सकती है, इसमें बहस से नहीं चिन्तन से समाधान होगा, विवाद का शमन करने के लिए संवाद की महती आवश्यकता है।

....जो भी मातृ संस्था एकता के सूत्र में बंधी हो, वही संघ को संगठित रख सकती है क्योंकि एकता व समन्वय से ही संस्था व समाज आगे बढ़ता है। संगठन कोई भी हो वह तभी सफल होता है, सार्थक होता है जब उसमें अतीत की प्रेरणा हो, वर्तमान का ध्यान हो, भविष्य का उज्जवल सपना हो। संगठन को सर्वप्रथम पूर्वाग्रहों का त्याग आवश्यक होता है, साथ ही जो अच्छा है उसे छोड़ना नहीं और जो अनुपयोगी है उसे पकड़ कर बैठना नहीं। संगठन की वीणा इसी सूत्र मैत्री का गीत गाते हुए बज सकती है। एकता में ही श्रमण संघ व श्रावकसंघ की शान है। समाज सम्प से चलता है, जो समाज अपने सभी बन्धु-भगिनी का ख्याल करके, सबको जोड़ कर आगे बढ़ता है वही एक उज्जवल

आगरा में 5 मई 1973 को आयोजित एक कार्यक्रम में तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी, केन्द्रीय मन्त्री बलिराम भगत एवं सेठ अचलसिंह जी जैन आदि

इतिहास बनाने में सफल होता है। 'जैन कॉन्फ्रेंस' ने यह कार्य पहले भी किया एवम् आज भी सफलता प्राप्त करने में अग्रसर है।

तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं का अनुसरण करने वाले जैन समाज की विविध सामाजिक एवम् धार्मिक गतिविधियों का संचालन 'जैन कॉन्फ्रेंस' ने बड़ी सफलता से किया है एवम् जैन समाज को एकसूत्र में बाँधकर अच्छे प्रबन्धक होने का परिचय दिया है। 'जैन कॉन्फ्रेंस' का सामाजिक संगठन, स्वतन्त्रता संग्राम में सहयोग एवम् विभाजन के वक्त आपदा ग्रस्त भाई-बहिनों को पुनर्वास देने में योगदान रहा है, आज भी यह संस्था समाज के दीन-दु:खी लोगों को अपने द्वारा संग्रहित राशि से उनका जीवन संवारने में सहयोग कर रही है।

भारतीय समाज में जैन समुदाय का महत्व व्यापक ही नहीं, बल्कि कई मायनों में ऐतिहासिक भी है, तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं को शिरोधार्य कद देते हुए जैन समुदाय लगातार भारत की आध्यात्मिक, सामाजिक एवम् आर्थिक उन्नति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

जैन कॉन्फ्रेंस की विशेषताएँ

प्राचीन प्रतिनिधि संगठन: 'जैन कॉन्फ्रेंस' स्थानकवासी जैन समाज का एक प्राचीन एवम् प्रतिनिधि संगठन है जो सन् १९०६ से आज तक अनेक प्रकार के अवरोधों के बावजूद गतिमान है।

अखिल भारतीय स्वरुप एवम् प्रभाव: 'जैन कॉन्फ्रेंस' एकमात्र ऐसी संस्था है, जिसका प्रभाव भी अखिल भारतीय है।

संघीय विश्वसनीयता: 'जैन कॉन्फ्रेंस' एकमात्र ऐसी प्रतिनिधि संस्था है, जिसकी सम्पूर्ण चतुर्विध संघ में समान रुप से विश्वसनीयता है।

श्रमण संघ की जन्मदाता: 'जैन कॉन्फ्रेंस' अपने **शेष पृष्ठ २३ पर...**

राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट
पूज्य गुरुदेव श्री आनंदऋषि जी म.सा. के
दीक्षा जयंती पर शत-शत वंदन नमन

Vijayraj Gandhi
Mob: 9841117995

SureshKumar Gandhi
Mob: 8680080811

Ashokkamar Gandhi
Mob: 9841457260

VIJAY JEWELLERS

An Exclusive Showroom for
916 KDM Gold & Diamond Jewellery and Silver Articles

114/10, Gandhi Road, (L.I.G.H. Colony),
West Tambaram, Chennai,
Tamil Nadu, Bharat - 600045.
Ph : 044-2226 7200, 98843 32960

पृष्ठ २२ से ... जन्म काल से ही संघीय एकता की पक्षधर है, 'जैन कॉन्फ्रेंस' के प्रयासों से ही संत समन्वय होकर श्रमणसंघ का निर्माण कार्य सम्भव हो पाया, अस्तु 'जैन कॉन्फ्रेंस' श्रमण संघ की मातृ संस्था भी कही जाती है।

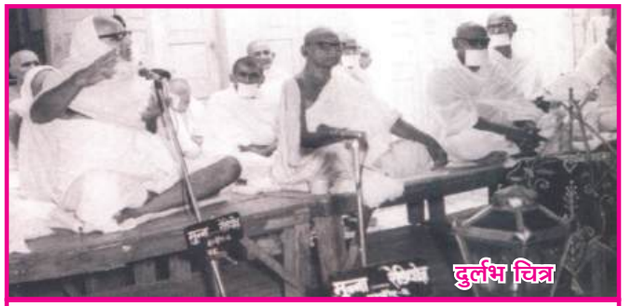

तप्पागच्छ गच्छाधिपति श्री समुद्रसुरी जी. म., उपाध्याय श्री केवल मुनिजी एवं अन्य प्रसिद्ध स्थानकवासी सन्तों की उपस्थिति में इन्दौर में महावीर जन्म कल्याणक

प्रामाणिक विधानुसार संचालन: जैन कॉन्फ्रेंस का अपने जन्म काल से ही एक प्रामाणिक विधान के अनुसार संचालन होता है, जैसा कि अनेकों सामाजिक संस्थाओं में देखा नहीं जा रहा।

निर्वाचित/चयनित अध्यक्ष: जैन कॉन्फ्रेंस का संचालन निर्वहन निर्वाचित/चयनित अध्यक्ष द्वारा ही संचालित होता है। केन्द्रीय कार्यकारिणी के प्रमुख सदस्यों की नियुक्ति या निष्कासन का अधिकार केवल राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय को ही प्राप्त है।

बहुआयामी प्रकल्पों की शाश्वतता: 'जैन कॉन्फ्रेंस' संभवत: जैन समाज की ऐसी एकमात्र संस्था है जो अनेकों योजना प्रकल्पों के अन्तर्गत बहुआयामी कार्यों को शाश्वत रुप से संचालित कर रही है।

संघर्ष और सफलता का इतिहास: 'जैन कॉन्फ्रेंस' ऐसी सामाजिक संस्था है जिसका संघर्ष और सफलता का अपना एक प्रमाणित इतिहास है। प्रत्येक घटनाक्रम का लिखित आधार है, ये दस्तावेज ही 'जैन कॉन्फ्रेंस' के जीवंत विकास का प्रमाण है।

लोकतांत्रिक सामाजिक संगठन: 'जैन कॉन्फ्रेंस' एक ऐसी सामाजिक संस्था है जिसका प्रमुख कार्य स्थानकवासी जैन चतुर्विध संघ का ध्यान रखना है, भी ये संस्था आध्यात्मिक नहीं, लोकतान्त्रिक सामाजिक संगठन है।

'जैन कॉन्फ्रेंस' का संचालन विशाल पैमाने पर होने के बाद भी योजनाओं के संचालन का खर्च 'जैन प्रकाश' का लगातार प्रकाशन आदि दानी महानुभावों द्वारा दिए गए सहयोग एवम् दान से होता है।

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा सम्पन्न ऐतिहासिक कार्य:

समस्त संघों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास

➢स्थानकवासी जैन परम्परा के रक्षण हेतु समस्त संत साध्वी जी म.सा. को एक संगठन में लाने का सफल प्रयास एवम् पत्री प्रकरण का समाधान।

➢ स्थानकवासी जैन पू.संतों-साध्वी जी म.सा. में परस्पर वंदना व्यवहार एवम् सहचिन्तन, सह विचरण करने में सफलता।

➢ सहस्त्रादिक साधना भवनों के निर्माण का वातावरण बना कर सामूहिक साधना के द्वार खोलने का प्रयास।

➢ अनेकों शिक्षा केन्द्र, धार्मिक पाठशालाएँ एवम् मुमुक्षु आत्माओं के शिक्षण का प्रबन्ध।

➢ अनेकों साधु-सम्मेलनों एवम् श्रावक सम्मेलनों का आयोजन करके सामाजिक संगठन में अभिवृद्धि।

➢ श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की सादड़ी मारवाड़ में स्थापना।

➢ एक आचार्य एक समाचारी, एक संघ का आदर्श उपस्थित करने में सफलता।

➢ देश के विभाजन के समय हजारों विस्थापित परिवारों को 'भारत' लाकर पुनर्वास कराने में सहायता।

➢ जैन समाज के हजारों लोगों को विभिन्न योजनाओं द्वारा आर्थिक, संसाधिक योगदान।

➢ चारों श्रमण संघीय पूज्य आचार्यों एवम् प्रमुख संतों को सामाजिक स्वीकृत स्वरुप चादर प्रदान करके अनुमोदित करने का प्रयास।

➢ आगम साहित्य, धार्मिक साहित्य, प्रवचन एवम् अर्धमागधी कोष का प्रकाशन, अनेकों सम्मान एवम् सूचना पटक साहित्य का प्रकाशन

➢ 'जैन प्रकाश' नामक के केन्द्रीय मुख पत्र का नियमित प्रकाशन।

➢ केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली स्थित 'जैन भवन' का नियमित संचालन एवम् एकीकृत ईकाई के रुप में प्रादेशिक संगठनों के साथ समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक सघन सम्पर्क।

➢ लोकतान्त्रिक संगठन रचना विधिवत बने विधान के अन्तर्गत सदस्यों द्वारा प्रतिनिधि रुप हिस्सेदारी व संचालन निर्वाचन या चयन द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव एवम् अध्यक्ष महोदय द्वारा समस्त कार्यकारिणी का कार्यभार।

क्रमश:

वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है

अनिल कुमार खटेड़
9432259373
लाडनूं निवासी कोलकाता प्रवासी

सामाजिक कार्यकर्ता व पूर्व सदस्य उत्तर पश्चिम रेलवे सलाहकार समिति
कार्यकारी सदस्य लाडनूं नागरिक परिषद कोलकाता
सदस्य जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा लाडनूं व उत्तरपाड़ा
उत्कृष्ट सामाजिक कार्यकर्ता के रुप में एसडीएम लाडनूं द्वारा सम्मानित
रेलवे में डेगाना रतनगढ़ सेक्शन पर दानदाताओं द्वारा विकास हेतु डीआरएम जोधपुर द्वारा सम्मानित

83 आर के स्ट्रीट, फ्लैट नंबर 07, आनंद भवन
मौसमी क्लब के पास, पी.ओ. उत्तरपारा,
पश्चिम बंगाल, भारत- 712258

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री लोद्रवापुर जैन तीर्थ

जैसलमेर: लगभग ७५ सेमी. पद्मासन मुद्रा में लोद्रवा पार्श्वनाथ की ऊँची, श्यामवर्णीय प्रतिमा जी एक हजार फणों के साथ सुशोभित, जिन्हें लोद्रवा पार्श्वनाथ दादा के साथ सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ दादा के नाम से भी जाना जाता है।

तीर्थ: यह राजस्थान में जैसलमेर के पास १७ कि.मी 'लोद्रवा गांव' में है।

ऐतिहासिकता: प्राचीन काल में 'लोद्रवा' लोद्र राजपूतों की एक बड़ी और समृद्ध राजधानी थी, यह शहर अपने प्राचीन विश्वविद्यालय के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि प्राचीन काल में राजा सागर ने यहाँ पर शासन किया था, उनके दो बेटे श्रीधर और राजधर ने जैन धर्म अपनाया, उन्होंने चिंतामणि पार्श्वनाथ दादा का सुंदर जिनालय बनवाया, इस जिनालय को मुस्लिमों ने नष्ट कर दिया, श्रेष्ठी खिमसी जी ने इस जिनालय का जीर्णोद्धार शुरू किया और उनके बेटे पुंशी ने नवीकरण पूरा किया। रावल भोजदेव और जैसलजी के बीच युद्ध हुआ, जैसलजी विजयी हुए, उसने एक नया शहर बनाया 'जैसलमेर' जो उनकी राजधानी बन गया। श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा जी को 'जैसलमेर' लाया गया और वहाँ एक जिनालय जी में प्रतिष्ठित किया गया। श्री थारुशाह ने जिनालय जी का जीर्णोद्धार कराया, लोद्रवा और एक नई प्रतिमा जी की खोज शुरू हुई। सौभाग्य से पाटन के दो कुशल कारीगर असाधारण और सुंदर प्रतिमा जी को मुल्तान ले जाया गया, जो उन्होंने अपने जीवन काल के दौरान बनाई थी। दोनों लोद्रवा में एक रात के लिए रुक गए। दैवीय शक्ति ने उन्हें एक सपने में थारुशाह को प्रतिमाएँ सौपने को कहा। थारुशाह को भी यही सपना आया, सुबह जब थारुशाह ने कारीगरों से प्रतिमाजी का मुल्य पुछा, तो उन्होंने प्रतिमाजी का मुल्य नहीं बताया, बिना मुल्य किए प्रतिमाओं का मुल्य उन्होंने कारीगरों को पर्याप्त सोना दिया और इन प्रतिमाओं को प्राप्त किया, इसलिए यह प्रतिमाएँ 'अमूल्य पार्श्वनाथ' के रूप में भी जाना जाता है, जिस रथ में इन प्रतिमाएँ को लाया गया था आज भी सुरक्षित दर्शनीय है। प्रतिमाओं को विक्रम संवत १६७५ में आचार्य जिनराजसूरिजी की निश्रा में प्रतिष्ठित किया गया, यह एक प्राचीन तीर्थ है, जैसलमेर के पंचतीर्थों में से एक है, इस तीर्थस्थान के अधिष्ठायक धरणेन्द्र देवता चमत्कारी हैं, कई भाग्यशाली लोगों ने दर्शन प्राप्त किए हैं। चार मुख्य जिनालय जी के चारों कोनों में छोटे जिनालय हैं, आदिनाथ, अजीतनाथ, संभवनाथ की प्रतिमाएँ और चिंतामणि पार्श्वनाथ इन चार देरासरों में प्रतिष्ठित हैं, जैसा कि जिनालय जी लोद्रवा गाँव में होने से, मूलनायकदादा को 'लोद्रवा पार्श्वनाथ' के नाम से जाना जाता है। जिनालय जी का नवीनीकरण वि. सं. २०३४ में किया गया, लोद्रवा पार्श्वनाथ की यह प्रतिमाजी मनमोहक, शानदार और चमत्कारी है, यहां कई चमत्कार होते रहते हैं, कुछ समय पहले यहां एक ६ फीट लम्बे धरणेन्द्रदेव के दर्शन भक्तजनों को हुए। भारत-पाक युद्ध के दौरान, जब बमबारी युद्ध चल रहा था, जिनालय जी के शिखर पर पूरे युद्ध की रक्षा के लिए कई लोगों को देखा गया था।

अन्य मंदिर: यहाँ दादावाड़ी तथा घंटाघरण महावीर जी का मंदिर है।

कला और मूर्तिकला के कार्य: पार्श्वनाथ दादा की प्रतिमाजी अत्यन्त चमत्कारिक है, देरासर विशाल व सुंदर बनाया हुआ है, स्तंभों, छत और शिखर में प्रत्येक नक्काशी कुशल शिल्प कौशल का एक ज्वलंत दृश्य प्रस्तुत करता है। यहां की प्रतिमा जी को देखकर, किसी को लगता है कि एक उत्सुकता थी ज्वलंत सुंदरता के लिए मूर्तिकारों के बीच प्रतिस्पर्धा रही होगी, मुख्य मेहराबदार तोरण गेट की कलात्मकता वास्तव में सुंदर है, समवसरण, अष्टापदगिरि और कल्पवृक्ष खूबसूरती से नक्काशीदार और देखने लायक है। प्राचीन लकड़ी के रथ को खूबसूरती को देखा भी जाना चाहिए, ठहरने हेतु धर्मशाला AC कमरे, हाल एवं भोजनशाला की सुन्दर व्यवस्था है।

दिशानिर्देश: जैसलमेर का रेलवे स्टेशन १७ किलोमीटर की दूरी पर है। यहां से बस सेवा और निजी वाहन उपलब्ध हैं।

शास्त्र: जिनालय जी का उल्लेख 'शतदल पद्मायंत्र' और 'लोद्रवपुरी' में, चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन से किया गया है। लोद्रवा पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा जी जिरावाला तीर्थ में है, **भीलडियाजी** तीर्थ, चेन्नई में वेपरी में तथा कोलकाता में भी लोद्रवा पार्श्वनाथ जी का मंदिर है।

ट्रस्ट: श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, पोस्ट: लोद्रवपुर, जिला जैसलमेर, राजस्थान, भारत - ३४५००१.

युगप्रधान दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त सूरि का संक्षिप्त परिचय

जैन धर्म के किर्तिमान काल के २४ वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने केवलज्ञान प्राप्त होने के पश्चात, चतुर्विध संघ साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की स्थापना हुयी। महावीर स्वामी के मोक्ष पधारने के पश्चात संघ संचालन गणधर सुधर्मा स्वामीजी ने किया, सुधर्मा स्वामी की पाट परम्परा में श्री जिनदत्तसूरि ४१ वें आचार्य बनें और पहले दादा गुरुदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए।

शेष पृष्ठ २५ पर...

पृष्ठ २४ से ... श्री जिनदत्तसूरि जी का जन्म विक्रम संवत ११३२ में धवलक्कपुर-धोलका में वाछिगला के गृहांगन में माता वाहड़देवी की कुक्षि से हुआ। माता ने स्वप्न में चंद्रमा देखा, फलस्वरूप बालक का नाम सोमचंद्र रखा गया। सोमचंद्र बचपन से ही बहुत प्रज्ञावान एवं वैराग्यवान थे। विक्रम संवत् ११४१ में मात्र ना वर्ष की आयु में ही धर्मदेव उपाध्याय के द्वारा दीक्षित हुए और विक्रम संवत ११६९ वैशाख सुदी को आपको चित्तौड़नगर में विराट जनमेदिनी के समक्ष आचार्य पद से विभूषित किया गया।

साहित्य साधना:

आचार्य श्री जिनदत्तसूरि की रचनाओं को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है...

१. स्तुति परक साहित्य

२. औपदेशिक साहित्य

प्रकीर्णक साहित्य

गणधर स्तुति परक रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ उच्चकोटि का उत्तम बन्ध है। प्राकृत भाषा में लिखा गया यह ग्रंथ, भाषा व विषयवस्तु की दृष्टि से अद्भुत है, इसी प्रकार गणघर सप्ततिका भी स्तुति परक अनूठा ग्रंथ है। औपदेशिक साहित्य की गणना में उनका प्रश्नोत्तर शैली में लिखा संदेश दोहावली ग्रन्थ समाधान देता है, इसी प्रकार उत्सूर पदोद्घाटन कुलक, चैत्यवंदन कुलक, उपदेश कुलक आदि अनूठी कृतियां औपदेशिक शैली में लिखी गई हैं। उपदेश धर्म रसायन, काल स्वरूप कुम्लक, चर्चरी आदि ग्रंथों की रचना उस समय की बोलचाल भाषा में अर्थात् अपधेश भाषा में है, इन ग्रंथों में इनके पांडित्य, शालीय अवगाहन व गंभीर चिंतन परिलक्षित होता है।

अंतिम समय का चमत्कार

वि.सं. १२११ का उनका चातुर्मास अजमेर में होना था, अजमेर के राजा अर्णोराज और सकल संघ की विनंती सुनकर उन्होंने कहा कि 'अजमेर' मैं आऊंगा, पर एक दिन के लिये या एक चातुर्मास के लिये नहीं, अपितु सदा-सदा के लिये। अजमेर की भूमि के आमंत्रण को मुझसे स्वीकार करना ही है, क्योंकि यही नियति का संदेश है और नियति के संदेश को कभी भी कोई भी अन्यथा नहीं कर सकता। गुरुदेव श्री अजमेर पधारे। आषाढ़ सुदि ११ का मंगल प्रभात, गुरुदेवश्री ने आगमन स्वीकार कर लिया था, नवकार महामंत्र का जाप प्रारंभ था, वे अपने ध्यान में लीन थे। आत्मलीनता के उस वातावरण में गुरुदेवश्री का स्वर्गवास हो गया।

दादा गुरुदेव व दादावाड़ी

इस जग में आज कोई ऐसा जैन नहीं होगा जो पूज्य दादा गुरुदेव के नाम से परिचित न हो। केवल जैनी ही नहीं जैनेत्तर भी अधिकांश व्यक्ति दादा के नाम से पूर्ण परिचित हैं, तभी तो देश के कोने-कोने में 'दादावाड़ी' स्थापित है।

चमत्कारी वस्त्र

जब गुरुदेव के देह का अग्निसंस्कार किया गया, तब एक दिव्य चमत्कार हुआ, ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ, कभी नहीं सुना गया, उनकी काया जल गई, परंतु उनके द्वारा धारण किए गए वस्त्र नहीं जले। न चादर जली, न चोलपट्टा जला, न मुहंपत्ती जली। यह चमत्कार देखकर लोग विस्मय से भर उठे, तभी देववाणी हुई ये चमत्कारी वस्त्र संघ के सदा संकटों से बचायेंगे, तब से गुरुदेव के ये चमत्कारी वस्त्र जैसलमेर के ज्ञान भंडार में सुरक्षित हैं।

६ से ८ मार्च २०२६ को जैसलमेर में होगा चादर महोत्सव

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ समुदाय के प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त सुरीश्वर के ८७१ वर्ष पुराने अग्निसंस्कार में नहीं जलने वाले चादर, चोलपट्टा और मुंहपत्ती का चादर महोत्सव ६ से ८ मार्च २०२६ को स्वर्ण नगरी जैसलमेर में आयोजित किया जा रहा है, इसमें देशभर में फैले ३० हजार भक्त हिस्सा लेंगे।

चादर महोत्सव आयोजन समिति के मंत्री पदम कुमार टाटिया और संयोजक तेजराज गुलेच्छा के अनुसार महोत्सव का उद्देश्य विश्वशांति के लिए प्रयास करना है, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत को आमंत्रित करने का प्रयास किया गया है।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर के प्रकाशचंद लोढ़ा के अनुसार चादर महोत्सव में आने वाले श्रद्धालुओं को जैसलमेर में स्थित प्राचीन जैन ज्ञान भंडार, लोद्रवा पार्श्वनाथ तीर्थ, अमर सागर तीर्थ, ब्रह्मासर तीर्थ के दर्शन वंदन का लाभ भी मिल सकेगा।

जय जिनेंद्र! जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

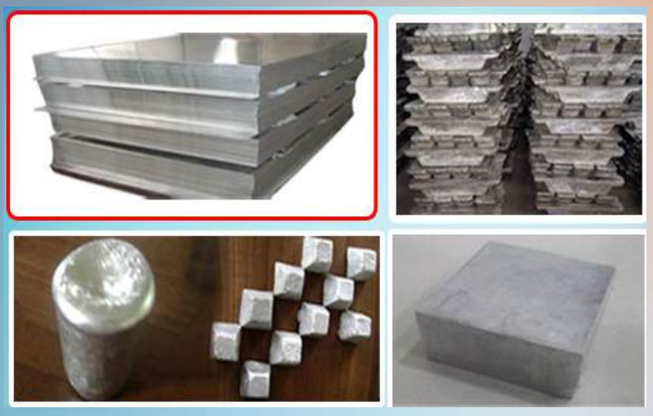

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road,
Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

भारतीय संस्कृति धनपतियों की नहीं धर्मात्माओं का सम्मान करती है

-आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी

गाजियाबाद: यह मेरा सौभाग्य है गुफा मंदिर तीर्थंकर पार्श्वनाथ स्वामी व क्रांतिकारी राष्ट्र संत तरुण सागर जी महाराज की स्मृतियों के दर्शन करने का अवसर मिला। भारत की परम्परा भारत की स्मृतियों में संतों, ऋषियों, मुनियों के त्याग की एक महागाथा है, यह गाथा विश्व मानवता के लिए एक प्रेरणा रही है। अयोध्या में भगवान प्रभु राम के मंदिर का ध्वज आरोहण हुआ, जो पूरे विश्व में सनातन का वैभव बता रहा है। प्रथम तीर्थंकर राजा ऋषभदेव स्वामी व चार अन्य जैन तीर्थंकर अयोध्या की धरती पर पैदा हुए, आध्यात्मिक नगरी काशी में चार तीर्थंकर अवतरित हुए, महावीर स्वामी, संभवनाथ स्वामी की जन्मस्थली के दर्शन हुए, इन २४ जैन तीर्थंकरों ने समाज को एक नई दिशा प्रदान की, उन्होंने मानव समाज को करुणा, मैत्री, अहिंसा की प्रेरणा दी। मानव के साथ-साथ जीव जंतु के प्रति दया का भाव दिया। मानव सभ्यता को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाना है तो अध्यात्म के साथ चलना होगा, यह बात भारत गौरव प.पू. साधना महोदधि अंतर्मना आचार्यश्री १०८ प्रसन्नसागर जी महाराज के सानिध्य में श्री तरूणसागरम् पारसनाथ अतिशय तीर्थ धाम 'मुरादनगर' में चल रहे पंचदिवसीय महोत्सव के अवसर पर १०० दिन में तैयार गुफा मंदिर का लोकार्पण करने पहुंचे उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने उपस्थित गुरुभक्तों से कही, कहा कि मुझे खुशी है कि हमारी सरकार ने उत्तर प्रदेश के पावागढ़ में, जहां तीर्थंकर महावीर का निर्वाण हुआ, उस 'फाजिल' नगर का नाम 'पावानगरी' के रूप में उसके नामकरण की कार्यवाही को आगे बढ़ाया है।

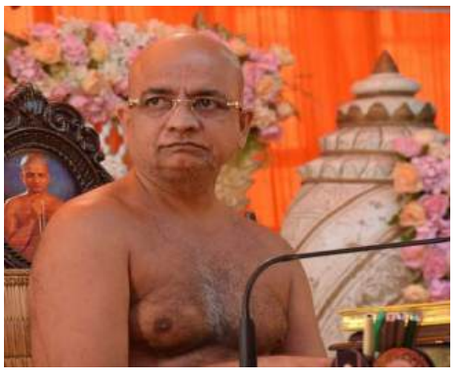

जैन मुनियों की परम्परा पवित्रता को बढ़ाने का कार्य कर रही है, नवकार दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने देश को नौ सूत्र दिए, जैन मुनि की परम्परा उसी पवित्रता के कार्यों को आगे बढ़ा रही है।

५५७ दिनों की कठोर साधना ४९६ दिन का निर्जल उपवास का अनुशासन आत्म संयम का एक अद्भुत उदाहरण देखने को मिलता है कि अगर हम संकल्प कर लें तो जो हमें बाहर दिखाई दे रहा है वह सब हमें अंदर दिखाई देने लगेगा, मुझे प्रसन्न सागर जी साधना के माध्यम से देखने व अनुभव करने का अवसर मिला, इस अवसर पर अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर गुरुदेव ने कहा किं बसंत आता है तो प्रकृति मुस्कुराती है और संत आता है तो संस्कृति मुस्कुराती है।

ये मंच योगी का मंच है, त्यागी का मंच है, जिंदगी में त्यागी बन के जीना भारतीय संस्कृति का सिद्धान्त है, क्योंकि भारतीय संस्कृति धनपतियों का नहीं धर्मात्माओं का सम्मान करती है। भारतीय संस्कृति रागी का नहीं त्यागी का सम्मान करती है, भारतीय संस्कृति सत्ताधीशों का नहीं संन्यासियों का सम्मान करती है। इवाकशु कुल महंत श्रवण योगी तिलक आदित्य नाथ योगी जी ने २६ साल की उम्र में पूरा जीवन परिवार समाज के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया, इस सदी का पुण्य कहो की दोनों बड़े नेता मोदी जी और योगी जी ने पूरे विश्व में 'भारत' को शिखर पर लाकर खड़ा कर दिया। भारत में राम की मर्यादा कृष्ण का प्रेम और महावीर की अहिंसा उद्देश्य सफल होता दिखाई दे रहा है।

लौंग की माला से सम्मान किया व कमंडल भेंट कर दिया आशीर्वाद

आयोजन से पूर्व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी व उपाध्याय मुनि पीयूष सागर जी गुरुदेव सहित ससंघ के दर्शन कर आशीष ग्रहण किया, तत्पश्चात १०० दिनों में बने भव्य गुफा मंदिर का लोकार्पण किया, जहां उन्होंने तीर्थंकर पार्श्वनाथ स्वामी के दर्शन किए, जिसके बाद समाधिस्थ क्रांतिकारी राष्ट्र संत तरुण सागर जी महाराज की स्मृतियों के दर्शन किए।

मुख्यमंत्री योगी ने गुरुदेव द्वारा लिखित 'अंतर्मना उवाच' व 'मेरी बिटिया' पुस्तक का विमोचन किया, इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार मंत्री मंडल के सुनील शर्मा, नरेश कश्यप, सांसद अतुल गर्ग, विधायक नंद किशोर गुर्जर, अमित पालज, पूर्व सांसद रमेश चन्द तोमर, भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल सहित बड़ी संख्या में गुरुभक्त परिवार मौजूद थे। संचालन ब्रह्मचारी तरुण भैया व आभार अध्यक्ष तरुण क्रांति मंच के सुनील जैन ने माना।

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल, रोमिल पाटणी

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES
NEW PRODUCT

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO® An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada, Navimumbai-400705, INDIA Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व बढ़ेगा
सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Samrat Jewellers
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर, स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादरपश्चिम, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व बढ़ेगा
सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

जिस घर में गुरू राजेन्द्र की तस्वीर,
उसकी बदल गयी तकदीर।
जिस घर में गुरू की मुरत, उस घर में हंसती हर सूरत॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन नवग्रह मंदिर
मनोहरमल गेलडा
Mob: 9444046945
श्री महावीर जैन मंडल ट्रस्ट (रजि.)
श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन नवग्रह मंदिर, कोण्डितोप, चेन्नई
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन नवग्रह ७२ जिनालय तीर्थ
प्रवीणभाई मफतलाल मेहता धाम
कारीपाक्कम रोड, गद्रगुंटा (आ.प्र.)
13, Padavatamman Koil Street, Kondithope, Chennai, Tamilnadu, Bharat- 600001
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

विश्ववंदनीय दादा गुरूदेव
श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के
पौष सुदि सातम पर कोटि-कोटि वंदन
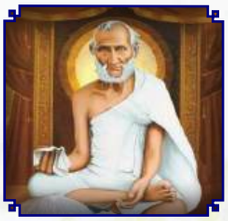
शैलेषजी अजीतमलजी दोशी
9820187704
.....
सुमेर सरस्वती को. ऑ. हा. सोसायटी 1301, 13वां माला,
9वां लैबर्नम रोड, ग्रांट रोड, गामदेवी, मुंबई, भारत-400007

तीर्थ यात्रा सुगम के लिए तीर्थ निर्देशिका जरुरी

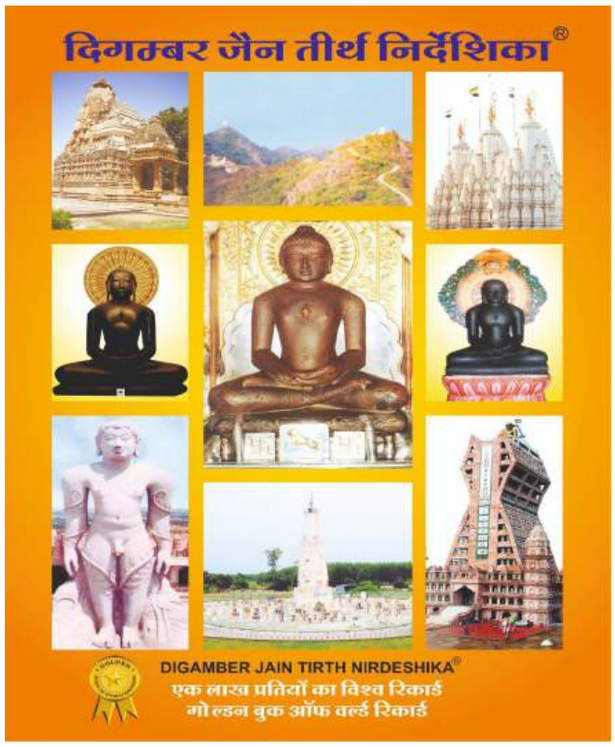

सम्पूर्ण भारत के दिगम्बर जैन तीर्थों की नवीन सम्पूर्ण जानकारी सहित लोकप्रिय गोल्डन बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड प्राप्त दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका जिसमें

- लेटेस्ट मोबाईल न./ मेल आई डी/ वेब
- क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाएँ
- कमरे एसी/नान एसी/ भोजनशाला
- रेलवे / बस स्टेण्ड/ एयरपोर्ट से दुरी
- क्षेत्र की एतिहासिकता
- पहाड़ है या नहीं / गाड़ी जा सकती है/ सिढियाँ कितनी हैं।
- आस पास कितने तीर्थ है एवं दुरी
- क्षेत्र का बैंक एकाउन्ट आदि अनेक लोकेशन QR कोड

आदि अनेक जानकारी, जो आपकी यात्रा सुविधाजनक कर मुंबई में पोदनपुर, बोरीवली (प.), भुलेश्वर पर उपलब्ध है।
अधिक जानकारी हेतु
संपर्क करें हसमुख जैन गांधी, इंदौर ९३०२१०३५१३
मुंबई में उपलब्ध बोरीवली (प.) - आदिनाथ बाहुबली जिनालय **90048 70811**, पोदनपुर त्रिमूर्ति **97020 91008**,
चंदप्रभु जिनालय भूलेश्वर **99202 96697**

गोमाता के संपर्क में आने मात्र से मनुष्य की सकारात्मक आभा बढ़ने लगती है

DR.SATISH RAKHECHA
Mob:- 9586000751
Main Bazar, Selamba, Taluka Sagbara,
Narmada, Gujarat, Bharat - 393025

गुरुसप्तमी के पावन पर्व पर विश्वप्रसिद्ध मोहनखेड़ा तीर्थ में सभी जैन धर्मावलम्बियों का स्वागत है

RV
Rajmal H. Vanigota
Mob: +91 98210 97036
A: 406, Gundecha Chambers, Nagindas Master Road,
Fort, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 023
T: 22623349/22623361 | E: vanigota.rajmal@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोलें

आइये हम सब मिलकर शुरूआत करें
जय भारत से...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

मदनलाल नाहटा
व्यवसायी व समाजसेवी
लाडनूं निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३१०६०९७९

मदनलाल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जैन समाज में 'एकता' होनी ही चाहिए, जैन समाज में जैनियों की संख्या बहुत ही कम है, उसमें भी अगर 'एकता' नहीं रहेगी तो हमारा समाज बिखरा ही रह जाएगा, सभी जैनियों को अपना उपनाम के बाद 'जैन' ज़रूर लगाना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी भी है और विमुख भी है, ऊन युवाओं को उचित संस्कार और मार्गदर्शन मिल रहा है, वे युवा वर्ग ही अपने धर्म समाज से जुड़े हैं।

गाय माता को राष्ट्रीय माता का सम्मान ज़रूर मिलना चाहिए, सनातन धर्म में गौमाता को पूजनीय माना गया है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोलना चाहिए' इंडिया नहीं अभियान के बारे में कहा कि 'भारत' हमारे देश का वास्तविक नाम है, 'भारत' हमारी पहचान है, 'भारत' नाम पर हमें गर्व है तभी तो हम भारतवासी हैं।

मदनलाल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'लाडनूं' के निवासी हैं, आपका जन्म 'लाडनूं' में सम्पूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में सम्पन्न हुई है, आप लाडनूं नागरिक परिषद कोलकाता शाखा के संयोजक, महावीर सेवा सदन कोलकाता के उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं व अन्य कई संस्था से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

-जिनागम

अनिल कुमार खटेड़
समाजसेवी
लाडनूं निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७४३९४४८६५१

अनिल जी 'जैन' एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'जैन' भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या के ०.४ % यानी ५० लाख के लगभग हैं, इनमें भी 'जैन' विभिन्न समुदायों में बंटा हुआ है, जो प्रमुख है तेरापंथी, मंदिर मार्गी, दिगम्बर, श्वेताम्बर, बाईसटोला, खरतरगच्छ आदि समुदाय हैं, सभी समुदाय या परंपरा वाले लोग महावीर स्वामी को अपना पूजनीय मानते हैं, लेकिन सिद्धान्तों के पालना करने में भिन्नता के कारण अलग अलग परंपरा को मानते हैं, हर सम्प्रदाय के अलग आचार्य हैं पर तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य की परंपरा में चलता है, एक आज्ञा का पालन करता है जिसके कारण आज भारत में 'तेरापंथ' सबसे बड़ा धर्मसंघ है, जिसके वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी हैं। जैनियों में एकता न होने के कारण वो भारत के राजनैतिक पटल पर अपनी व अपने समाज की समुचित उपस्थिति दर्ज नहीं करा पा रहे हैं,जिस कारण से उनको राजनीतिक महत्व नहीं मिलता और ना ही वो सरकार की योजना में भागीदारी कर सकते हैं।

समय-समय पर विभिन्न जैन आचार्यों द्वारा 'एकता' के लिए प्रयास किए गए व किये भी जा रहे हैं, लेकिन आज तक उन प्रयासों को सफलता नहीं मिली है अतः मैं सभी जैन समुदाय के पदाधिकारियों व संगठनों से आव्हान करता हूं कि 'जैन एकता' की दिशा में सार्थक प्रयास करें। आज की युवा पीढ़ी में संस्कारों का निर्माण होना जरूरी है, संस्कार के बिना शिक्षा अधूरी है।

गाय माता को राष्ट्रीय गौमाता का सम्मान मिलना ही चाहिए, गाय एक कृषि प्रधान देश की-अमूल्य संपदा है।

भारत के संदर्भ में आपका कहना है कि निस्संदेह भारत को 'भारत' ही बोलना चाहिए, इंडिया नहीं, भारत सिर्फ भारत!

अनिल जी मूलतः राजस्थान के स्थित लाडनूं के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'लाडनूं' में सम्पूर्ण हुई, आप अनेक संस्थाओं से जुड़े हैं, जैसे जैन श्वेताम्बर तेरापन्थ सभा लाडनूं व उत्तरपाड़ा, लाडनूं नागरिक परिषद कोलकाता से जुड़े हैं।

आचार्य श्री तुलसी तेरापंथ के नौवें आचार्य थे, जिनके द्वारा अणुव्रत का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया था, वो संसार पक्षीय मेरे दादाजी थे, इसके अलावा उत्तर पश्चिम रेलवे सलाहकार समिति में दो बार सदस्य रहा हूं और मैं रतनगढ़, सुजानगढ़, लाडनूं, डीडवाना, छोटी खाटू, डेगाना सेक्शन के लिए रेल सुविधाओं व रेल सेवा में विस्तार के लिए बराबर प्रयासरत हूं, जिसमें मुझे सफलता भी मिली, जैसे हावड़ा से बाडमेर ट्रेन, यह मेरे ७ सालों के लगातार प्रयास से चली है, इसके अलावा मुझे लाडनूं एसडीएम से समाज सेवा में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित किया गया है, मैं वर्तमान में समाज सेवा के बहुत से कार्य कर रहा हूँ। जय भारत!

-जिनागम

विमलचंद जैन

अध्यक्ष मरुधर केसरी जैन ट्रस्ट अंबुर
बगड़ी निवासी-तमिलनाडु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४३१८४२८२

विमलचंद जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' आज हमारे समाज के लिए जरूरी हो गया है, क्योंकि आज हमारा समाज पंथवाद के चक्कर में बिखर रहा है, जिस कारण समाज का अस्तित्व खतरे में आ गया है, हमारे धार्मिक स्थलों पर भी अन्य समाज का कब्जा होने लगा है, अपने धर्म और समाज के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए जैन समाज को एक होना बहुत जरूरी है और हमारे गुरु भगवंतों को भी इस दिशा में मार्गदर्शन करना चाहिए, जिससे उनके मार्गदर्शन में संपूर्ण समाज एकसाथ एकमंच पर उपस्थित हों।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से दूर ही रहना चाह रही है, युवा पीढ़ी को बचपन से वह संस्कार नहीं मिलते, जिससे वह अपने धर्म समाज से जुड़े रहे, आज युवा पीढ़ी आधुनिकता की चकाचौंध में रमी हुई है।

गौमाता को राष्ट्रमाता घोषित करने के संदर्भ में आपका कहना है कि गाय हम सभी के लिए पूजनीय है, हमारे पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में भी गाय को माता का दर्जा मिला है, ईश्वर भी गाय की पूजा करते हैं, गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, हमारे यहां जैन गौशाला है जिसमें लगभग ५०० गोवंश हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

विमलचंद जी मूलतः राजस्थान में सोजत स्थित 'बगड़ी' के निवासी हैं, आपका जन्म और शिक्षा तमिलनाडु के 'अंबुर' में ही संपन्न हुई है, यहां आप फाइनेंस, ज्वेलरी व अन्य व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। जैन गौशाला के अध्यक्ष व मरुधर केसरी जैन ट्रस्ट के ३५ सालों से अध्यक्ष है, शंकर मंदिर में भी अध्यक्ष के रूप में सक्रिय हैं और भी कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!

-जिनागम

कन्हैयालाल बैद

व्यवसायी व समाजसेवी
बीदासर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२६८८५०५०

कन्हैयालाल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में कहते हैं कि समाज में एकता जरूरी है, आज हमारा समाज पंथों के कारण टुकड़ों में बंटा हुआ है, इसलिए अपने धर्म और समाज का कोई अस्तित्व नहीं दिखाई दे रहा, अपने धर्म समाज को बचाए रखने के लिए समाज में 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है और इसके लिए सर्वप्रथम हमारे सभी त्यौहार एक ही समय पर, एक ही दिन मनाया जाने चाहिए और सभी को इसका पालन करना चाहिए, जिससे समाज में एकरूपता स्थापित हो सके हमारे गुरु भगवंतों को भी इस दिशा में विशेष कदम उठाना चाहिए तभी 'जैन एकता' संभव हो सकती है।

सभी जैन पंथ तीर्थंकर महावीर के अनुयाई हैं, उनके सिद्धांतों का ही पालन कर रहे हैं, हमें महावीर स्वामी के सिद्धांतों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करना चाहिए, ना कि अन्य पंथ और संप्रदाय की निंदा करनी चाहिए, हम सभी 'जैन' हैं, इसे ही हमेशा ध्यान रखना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से दूर होती जा रही है, उनमें धर्म समाज के लिए आकर्षण कम होता जा रहा है, युवाओं को धर्म समाज से जोड़ना है तो आधुनिक यंत्रों के माध्यम से जोड़ा जा सकता है, जैसे युवा वर्ग आजकल मोबाइल से अधिक जुड़ा हुआ है, मोबाइल में यदि ज्ञानवर्धन धर्म से जुड़ी बातों का प्रचार-प्रसार हो, तो किसी न किसी रूप में युवा वर्ग भी अपने धर्म और समाज से जुड़ा रहेगा।

गाय को 'राष्ट्रमाता' घोषित करने के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से गाय का सम्मान और संरक्षण होना जरूरी है, गाय हम सभी के लिए पूजनीय है, इसलिए गायों का सम्मान व संरक्षण होना ही चाहिए और जैन समाज तो इसका परम समर्थन करता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', पर आज विश्वस्तर पर हमारे देश को इंडिया नाम से जाना जाता है, जो कि गुलामी का प्रतिक है।

कन्हैयालाल जी मूलतः है राजस्थान स्थित 'बीदासर' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई सालों से 'सूरत' में बसे हैं और प्लास्टिक मैन्युफैक्चरिंग के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा सूरत के साथ और भी कई संस्थाओं से जुड़े हैं। जय भारत!

-जिनागम

'जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें 'हम-सब जैन हैं'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

विजय कुमार बुरड़
सभापति, श्री जैसलमेर लौद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, क्षेत्रीय सभा दिल्ली
जैसलमेर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६८८७१३०९

विजय जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज देश की जनसंख्या में जैन समाज की आबादी मात्र नाम की रह गई है और उस पर भी हमारा समाज कई पंथ और संप्रदायों में बंटा हुआ है, जिससे अपने धर्म और समाज का अस्तित्व खतरे में आ गया है, आज की युवा पीढ़ी अंर्तजातिय विवाह करने लगी है, जिस कारण हमारे धर्म पर खतरा मंडराने लगा है, अपने धर्म समाज को बचाने के लिए समाज में एकता होना बहुत जरूरी है और इसमें हमारे गुरु भगवंतों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है, उनके द्वारा ही 'जैन एकता' संभव किया जा सकता है। 'जैन एकता' स्थापित होगी तभी हमारे धर्म और समाज का अस्तित्व बना रहेगा। आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर होती जा रही है और इसका कारण समाज में फैला पंथवाद, जिसके कारण युवा पीढ़ी असमंजस में है, इसीलिए युवा पीढ़ी धर्म समाज से दूर ही रहना चाहती है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है, बिल्कुल अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

विजय जी मूलतः राजस्थान स्थित 'जैसलमेर' के निवासी हैं, आपका जन्म और शिक्षा 'दिल्ली' में संपन्न हुई है, आप बैंक में सेवारत रहे हैं, वर्तमान में सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं, लोदरवा ट्रस्ट जैसलमेर के ट्रस्टी, आत्मानंद जैन सभा के सह कोषाध्यक्ष है, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

-जिनागम

पारसमल दांतेवाड़िया जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
आहोर निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४०१९६०७७

पारसमल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज जैन समाज में 'एकता' की कमी के कारण ही समाज बिखरा हुआ है और अपने समाज का कोई अस्तित्व नहीं है, यदि अपने धर्म और समाज की अस्तित्व को बनाए रखना है तो 'जैन एकता' होना बहुत जरूरी है और इसके लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा, तभी यह कार्य संभव हो सकता है।

आज की युवा पीढ़ी धर्म और समाज को लेकर असमंजस में है, उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा, जबकि पहले की अपेक्षा तपस्या बढ़ी है, युवाओं में जागृति आई है।

गौमाता को 'राष्ट्रमाता' घोषित करने के संदर्भ में कहते हैं कि गाय सभी के लिए पूजनीय है, हमारे धार्मिक ग्रंथों में भी 'गाय' के महत्व को बताया गया है, गायों का संरक्षण होना बहुत जरूरी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'! इस अंतर्राष्ट्रीय अभियान का मैं महत्वपूर्ण समर्थन करता हूँ।

पारसमल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'आहोर' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा कर्नाटक के 'बेल्लारी' में संपन्न हुई है, पिछले २० सालों से आप 'चेन्नई' में बसे हैं और कंप्यूटर पार्ट्स के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

-जिनागम

वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है
PARAS JAIN
Mob.:- +91 98401 96077
V-TEC
VISUAL TECHNOLOGY
835/3, Mount Road, Chennai, Tamil Nadu , Bharat - 600 002
Tel: 044 - 42337654/45034475/45120279/42149057/ 42149822 I Mob.: 98402 23925/93810 08312
E:info@visualtechnology.co.in | www.visualtechnology.co.in

जन्म दिवस १० दिसंबर पर विशेष

श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनिजी म. सा. 'कुमुद'

आपका जन्म दि. १०-१२-१९३७ (वि. सं. २० मार्गशिर्ष शुक्ला सप्तमी) को आकोलाग्राम जिला चितौड़ (राज.) में गाँधी परिवार में हुआ, आपके पिता का नाम नाथूलालजी व माता का नाम नाथबाई था, होनहार विरवान के होत चिकने पात आप के बाल्याकाल से ही आपको आत्मा का आभास होने लग गया था। आप प्रारम्भ से ही एक धर्मप्रेमी, देशभक्त धुन के पक्के तथा क्रांतिकारी विचारों के थे, उस समय देश स्वाधिनता संग्राम के दौर में था। आपने उसमें भी अपना रचनात्मक सहयोग दिया, पितृत्व सुख से किशोर अवस्था में ही वंचित हो जाने पर आपकी धर्म के प्रति निष्ठा ओर बढ गई। आपके धार्मिक विचारों को आपकी माता एवम् बहिन श्री उगमकुंवरजी म.सा. का संबल प्राप्त था, आपने स्व. पुज्य-प्रवर्तक श्री अम्बालालजी म. सा. के दर्शन किए तो आपके मन में भी वैराग्य की भावना जागृत हुई, इस भावना को गुरुदेव ने भी महसूस किया। आपके मन में जो वैराग की भावनाओं का तूफान उठा, उसी का परिणाम था परिवार एवम् समाज के घोर विरोध के बावजूद आपने दि. २ फरवरी १९५० (वि. सं. २००६ माघ शुक्ला पूर्णिमा) को कड़ियाँ ग्राम में दीक्षा ग्रहण कर 'सुजानमल' से श्री सौभाग्यमुनि के रुप में अवतरित हुए।

गुरुदेव के साथ हजारों मील की पदयात्रा कर जैनधर्म का संदेश 'अहिंसा परमो धर्मः' को घर-घर पहुँचाया। देखते ही देखते आप न सिर्फ मेवाड़ स्थानकवासी समाज में छा गये, अपितु पूरे भारतवर्ष के स्थानकवासी समाज के उच्च संतों में आपकी गणना होने लगी। जैन समाज को आपने एक नई दिशा तथा चिंतन दिया, इसी का परिणाम था कि द्वितिय पट्टधर आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषीजी मा. सा. ने आपको श्रमण संघ का महामंत्री नियुक्त किया, आपकी जिम्मेदारी ओर बढ़ गई, आपने पूरे स्थानकवासी समाज को श्रमणसंघ के तहत लाने का बिड़ा उठाया और काफी सफलता भी मिली। सन १९८३ में आपका मुम्बई में पधारना हुआ, आपने यहां मेवाड़ से आकर बसे सभी स्थानकवासियों को इकट्ठा किया तथा उन्हें श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ मेवाड़ मुम्बई नामक संस्था के तहत गठित किया। आपकी प्रेरणा से इस संस्था ने अपने कार्य के बल पर कुछ ही समय में अनेक साधना सघर्मी का निर्माण किया, अनेक संत व सतियों के चातुर्मास करवाकर धर्म आराधना की, अनेक रचनात्मक कार्य आपकी प्रेरणा से हुए। पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण के पश्चात आप ही मेवाड़ स्थानकवासी समाज के एकमात्र चमकते सूर्य बनें, आप एक अच्छे वक्ता, लेखक तथा कवि के रुप में जाने जाते हैं, आपके प्रवचनों में हमेशा अच्छी संख्या रहती थी, आपका हमेशा प्रयास रहता था कि मेवाड़ स्थानकवासी समाज के साथ सम्पूर्ण स्थानकवासी समाज संगठित हो, एक रहे तथा अखिल भारतीय श्रमण संघ के नेतृत्व में रहे।

श्रीमद् विजय श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा की 199 वीं जन्म तिथी
एवं 119 वीं पूण्य तिथी निमित्ते कोटि-कोटि वंदन

Happy New Year 2026

Happy New Year 2026

गुरु सप्तमी निमित्ते
सभी गुरुभक्तों को हार्दिक बधाई

Nemichand Sanghavi

Popat Sanghavi

Dinesh Sanghavi

PAYAL GOLD®
PRIVATE LIMITED
SINCE 1988
HOUSE OF BANGLES & JEWELLERY
195/197, Shanti Plaza, Kalbadevi Raod,Mumbai- 400002.
Enq: 022-22445566/ Mob. +91 9619670756,info@payalgold.com, www.payalgold.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

Investment Banking ♦ Family Office ♦ NBFC

www.intensivefiscal.com

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

Recent IPO

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,

Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100

Email: admin@intensivefiscal.com , virendra@intensivefiscal.com

Web: www.intensivefiscal.com

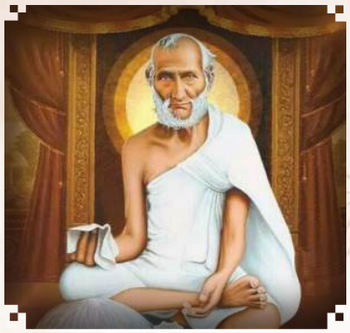

विश्ववंदनीय दादा गुरूदेव
श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के
पौष सुदि सातम पर कोटि-कोटि वंदन

श्रावकरत्न
राजकुमार जैन ओसवाल
Mob: 9818687200

राजरानी जैन
ओसवाल

OSWAL

Full Service Supplier for Automobile and other OEMs

MANUFACTURERS AND EXPORTERS OF ALUMINIUM PRESSURE DIE CASTED COMPONENTS

(With in-house Machining, Painting, Die Design/ Manufacturing & Assembly Facilities)

Suppliers to the leading Automobile, White Goods and General Engineering and other prominent Industries in INDIA & ABROAD.

Contact:

OSWAL CASTINGS PVT LIMITED

(IATF16949:2016, ISO14001:2015 & ISO45001:2018 Certified Company)

Regd. Office & Plant - I

Plot No.21,22,23, Sector-25, Faridabad, Haryana, Bharat - 121 004 Ph.: 0129-4292100

Plant - II

Nangla Bhiku, Palwal, Haryana, Bharat- 121102 Ph: 0127-5299360

Plant -III

Plot No 18-B, Smart Industrial Park, Near Natrip Pithampur,
Dhar, Madhya Pradesh, Bharat - 454774

Email- oswalcastings@oswalcastings.com Website- www.oswalcastings.com

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th December 2025 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598